रहीम

सेठ गोविन्ददास



ओरिएण्टल बुक डिपो

२३.८.५८

रहीम

रहीम

[पाँच अंकों में एक ऐतिहासिक नाटक]

लेखक
सेठ गोविन्ददास

ओरिएण्टल बुक डिपो
१७०४, नई सड़क - दिल्ली

प्रकाशक
ओरिएण्टल बुक डिपो
नई सड़क, दिल्ली।

मूल्य २)

डाक द्वारा २॥=)

मुद्रक
हिन्दी प्रिन्टिंग प्रेस
क्वीन्स रोड, दिल्ली।

निवेदन

अब्दुर रहीम खाँ, जो रहीम खानखाना के नाम से प्रसिद्ध हैं, अपने समय के साहित्यिक और राजनैतिक जगत् में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते थे। एक ओर वे बड़े भारी योद्धा और वीर थे और दूसरी ओर बड़े भारी साहित्यिक और कवि। राजनैतिक क्षेत्र में उन्होंने जो कुछ किया था उसका महत्व था उस काल में जिसमें वे जीवित थे। उनके राजनैतिक जीवन का अब केवल ऐतिहासिक महत्त्व है, परन्तु उनका साहित्यिक जीवन और साहित्य-सृजन अभी भी उतना ही महत्व रखता है जितना उनके जीवनकाल में रखता था। वरन् उनके द्वारा रचित साहित्य का अब शायद और अधिक महत्त्व हो गया है। रहीम की कविता केवल विद्वानों के मनोरंजन की वस्तु नहीं है, उसके अनेक अंश इस देश की जनता और उस जनता में भी ग्रामीण जनता की जिह्वा पर रहते हैं। सूक्तियों के सदृश उनका व्यवहार होता है और आज भी इस देश के न जाने कितने मानव उससे प्रेरणा और शान्ति पाते हैं। कवि रहीम हिन्दी के उन गिने-चुने कवियों में हैं जिनकी कविता का अस्तित्व जब तक हिन्दी भाषा का अस्तित्व है, तब तक रहने वाला है।

रहीम खानखाना का जीवन उत्थान और पतन की एक नाटकीय कहानी है। उनका जीवन चढ़ाव और उतार, उतार के पश्चात् फिर चढ़ाव और फिर उतार की अगणित घटनाओं से भरा हुआ था। उन्होंने अपने जीवनकाल में बादशाह अकबर और जहाँगीर, दो पीढ़ियों का शासन देखा था और उस शासन में प्रमुख रूप से भाग लिया था। वे केवल उन्नीस वर्ष की अवस्था में गुजरात के सूबेदार बनाये गये थे और जीवन भर लड़ाइयाँ ही लड़ते रहे। दक्षिण भारत में मुगल साम्राज्य कमजोर रहा, रहीम के जीवन के लगभग तीस वर्ष दक्षिण में बीते। उस काल के मुगल साम्राज्य की सबसे बड़ी पदवी खानखाना से वे विभू-

षित थे और कुछ काल तक मुगल साम्राज्य के प्रधानमन्त्री भी रहे थे। ऐसे रहीम खानखाना को अपने राजनैतिक पतन भी देखने पड़े। एक समय उनकी खानखाना पदवी भी छीन ली गयी, सारी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली गयी और कुछ दिन वे कैद में भी पड़े रहे।

रहीम का वैभव, हवेलियाँ, बाग आदि भी उस समय के सर्वश्रेष्ठ वैभवों में एक माने जाते थे। और दानशीलता तो उनकी इतनी बढ़ी-चढ़ी थी जितनी उस काल के बादशाहों की भी नहीं।

ऐसे बहादुर और सम्पन्न रहीम के मन में विराग का भी बहुत बड़ा पुट था। सम्पन्नता में विराग, और जीवन में राजनैतिक उथल-पुथल उनके साहित्य-रचना के प्रधान कारण हुए। मन के इसी विराग के कारण गोस्वामी तुलसीदास जी के प्रति वे अत्यधिक आकृष्ट हुए, उनके जीवन से सम्बन्ध रखने वाली जो किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं उनमें उनकी और गोस्वामी जी की भेंट का भी उल्लेख है।

सच्चे मुसलमान होते हुए भी रहीम राम और कृष्ण के परम भक्त थे। उनकी इस भक्ति से उनका सारा काव्य ओत-प्रोत है। उनकी तथा उस काल के कुछ अन्य मुसलमान कवियों की इस प्रकार की भक्ति के कारण ही भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी ने एक स्थान पर लिखा है— "इन एक-एक हरिजनन पै, कोटिन हिन्दू वारिये।" मुसलमान होते हुए भी रहीम भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक थे। इसलिए उनके हृदय में सहिष्णुता थी जिसके कारण वे हिन्दू धर्म और इस्लाम को, हिन्दू और मुसलमान को समान दृष्टि से देखते थे।

पच्चासी नाटक लिखने के पश्चात् जब मैंने पन्द्रह नाटक और लिखकर 'शतक' पूर्ण करने का विचार किया, उस समय मेरे मन में उठा कि ऐतिहासिक नाटकों में साहित्यिकों, कवियों आदि के जीवन वृत्तान्त भ लेकर कुछ नाटक लिख डालूँ। इस शृंखला में मैंने पहला नाटक 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' पर और दूसरा यह 'रहीम' पर लिखा है।

ऐतिहासिक नाटकों के सम्बन्ध में मैंने अपने एक ऐतिहासिक नाटक

हर्ष की भूमिका में लिखा है—

"मेरा मत है कि नाटक, उपन्यास या कहानी लेखक को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी भी पुरानी कथा को तोड़-मरोड़कर उसे एक नई कथा को बना दे। हाँ, कथा के अर्थ (Interpretation) वह अवश्य अपने मतानुसार कर सकता है।"

इस नाटक के लिखने में भी मैंने इसी नीति के अनुसरण करने का प्रयत्न किया है। रमजाना को छोड़कर इस नाटक के सभी पात्र ऐतिहासिक हैं, कोई काल्पनिक नहीं; मुहम्मद अमीन दीवाना और फहीम के सम्बन्ध में श्री मुन्शी देवीप्रसाद जी ने अपनी पुस्तक 'खानखाना नामा' में लिखा है—

"मुहम्मद अमीन दीवाना जो नाम का तो दीवाना था और काम सयानों के से करता था।" यह फहीम एक राजपूत का लड़का था, इसी की बाबत अब तक यह कहावत चली आती है कि—

"कमावै खानखाना,
उड़ावै मियाँ फहीम।"

एक और पात्री हसीना एक ऐतिहासिक किंवदन्ती से ली गई है। पर उसका हसीना नाम काल्पनिक है।

इस नाटक के पद्य और गीतों में अधिकांश रहीम के ही हैं। रहीम के अतिरिक्त उनके समय या उनके समय के पूर्व जो गण्यमान्य कवि हुए उनके भी कुछ पद्य और गीत रखे गये हैं। इनमें गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, मीरा, कबीर, तानसेन और रसखान हैं। इस बात का ध्यान रखा गया है कि किसी ऐसे कवि की कोई रचना न रखी जाय जो रहीम के बाद हुए हैं।

इस नाटक के लिखने में निम्नलिखित ग्रन्थों की सहायता ली गई है—

१. अबुलफज़लकृत आइने अकबरी, २. मुंशी देवीप्रसाद द्वारा लिखित खानखाना नामा, ३. श्री ब्रजरत्नदासकृत रहिमन विलास और

मग्रासिरुल् उमरा, ४. पं० अयोध्याप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित रहिमन-विनोद, ५. पं० रामनरेश त्रिपाठी द्वारा संपादित रहीम और कविता कौमुदी पहला भाग, ६. पं० सुरेन्द्रनाथ तिवारी द्वारा लिखित रहीम कवितावली, ७. अनूपलाल मंडलकृत रहिमन सुधा।

नयी दिल्ली
४–६–५५ गोविन्ददास

मुख्य पात्र, स्थान और समय

मुख्यपात्र—[नाटक में प्रवेश के अनुसार]

मुहम्मद अमीन दीवाना—एक पागल समझा जाने वाला रहीम के कुटुम्ब का कर्मचारी

मियाँ फहीम—रहीम का नौकर, जो पहले राजपूत था

रहीम—(अब्दुर रहीम खाँ) नाटक का नायक

अकबर—मुगल बादशाह

रमजाना—रहीम के घर की नौकरानी

माहेबानू—रहीम की पत्नी

हसीना—आगरे की एक सम्पन्न महिला

गोस्वामी तुलसीदास

जानाबेगम—रहीम की पुत्री

दानियाल—अकबर का शाहजादा, और जानाबेगम का पति

जहाँगीर—मुगल बादशाह

खुर्रम—जहाँगीर का शाहजादा, जो बाद में शाहजहाँ के नाम से बादशाह हुआ

स्थान

गुजरात में एक युद्ध-क्षेत्र अहमदाबाद, फतेहपुर सीकरी, आगरा, सोरों, चित्रकूट के निकट एक कस्बा, दक्षिण में एक युद्ध-क्षेत्र, बुरहानपुर, लाहौर, दिल्ली

समय

विक्रमीय संवत् १६३२ से १६८२ तक

उपक्रम

स्थान

गुजरात में युद्ध-क्षेत्र

समय

सन्ध्या

[क्षितिज से मिला हुआ एक मैदान दृष्टिगोचर होता है। पश्चिम दिशा में सूरज डूब रहा है। सूर्य तो नहीं दिखता, पर क्षितिज के नजदीक पश्चिमी आकाश में जो लाली दिखती है उससे सूर्यास्त हो रहा है, यह आभास हो जाता है। मैदानों में हाथियों, घोड़ों और आदमियों के कटे हुए अवयव बिखरे से पड़े हैं। घायल सैनिक भी पड़े हुए कराह रहे हैं। + भीषण रण हो रहा है। हाथियों की चिंघाड़ों, घोड़ों की हींस, सैनिकों के युद्ध-बोल और घायलों की कराहों से समस्त वायुमण्डल भरा हुआ है। कुछ देर के पश्चात् "अल्लाहो अकबर", "सूबेदार अब्दुर रहीम खाँ की जय" शब्दों से वातावरण गूँज उठता है। एक ओर के सैनिक भागते और दूसरी ओर के सैनिक उनका पीछा करते हैं।]

यवनिका

+ यह दृश्य एक सफेद चादर पर सिनेमा के द्वारा भी दिखाया जा सकता है।

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान

अहमदाबाद में सूबेदार के महल का बरामदा

समय

प्रातःकाल

[बरामदे के पीछे की ईंट चूने की दीवाल दिखती है, जिस पर तैल रंग है। इस रंग पर बेल-बूटे हैं। इस दीवाल के सामने दो पत्थर के खम्भों पर बरामदे की छत है। बरामदे की दाहिनी ओर चौकियों पर जवाहरात, सोने-चाँदी की चीजें, अनेक तरह के रेशमी कपड़े आदि सजे हैं। इन सजावट की चीजों की इतनी बहुतायत है कि इन सब चीजों का मूल्य लाखों रुपया है, यह इनके देखने से ही ज्ञात हो जाता है। मुहम्मद अमीन दीवाना और मियाँ फहीम का प्रवेश। दोनों तरुण हैं। रंग गोरा, शरीर ऊँचा पूरा; मुहम्मद अमीन दीवाना कुछ भरे हुए शरीर का और मियाँ फहीम कुछ दुबला। दोनों कुरता और ढीला पाजामा पहने हैं। सिर पर टोपी है।]

मुहम्मद अमीन

हा-हा-हा, मियाँ फहीम ! कभी जीवन में इतनी दौलत देखी थी ? हीरे, हा-हा-हा, पन्ने, हा-हा-हा, माणिक, हा-हा-हा, मोती, हा-हा-हा, नीलम, हा-हा-हा, पोखराज, हा-हा-हा, फीरोजे, हा-हा-हा, मूँगे, हा-हा-हा, गोमेद, हा-हा-हा, नवों रत्न हैं।

फहीम

हाँ, नवों रत्न हैं।

मुहम्मद अमीन

नवरत्न···नवरत्न···नवरत्न, हमारे मालिक रहीम···नवरत्न।

फहीम

और कितना सोना चाँदी, बेशकीमती कपड़े···क्या क्या···

मुहम्मद अमीन

खानखाना बैरामखाँ ने इन्तकाल फर्माने के पहले इसी गुजरात में इस दौलत को दफनाया था।

फहीम

(**कुछ आश्चर्य से**) खानखाना बैरामखाँ ने इस दौलत को गुजरात में दफ़नाया था?

मुहम्मद अमीन

बेशक! और जब बैरामखाँ फौत हुए उस समय अब्दुल रहीम थे चार बरस के। फौत होने के वक्त बैरामखाँ ने रहीम को वह स्थान बता दिया था, जहाँ यह दौलत दफनायी गयी थी। उसी को रहीम ने अब खोदा है।

फहीम

चार वर्ष के बच्चे को वालिद ने बतलायी थी दफनायी हुई दौलत की जगह और वह जगह याद रही बेटे को नौजवान होते तक! तुम भी विचित्र आदमी हो।

मुहम्मद अमीन

हा-हा-हा···हा-हा-हा, तुम देखते नहीं हो, बैरामखाँ का खून होकर गुजरात की जिस मिट्टी में वह मिला दिये गये थे, उसी मिट्टी में साहबजादे बढ़ रहे हैं। हा-हा-हा। और आज मुजफ्फर पर की फतह पर जब सारी दौलत खुशी में लुटा दी जायगी उसी वक्त देखना रहीम की कीर्ति को।

फहीम

पर भाईजान! गुजरात की यह लड़ाई भी बड़ी विचित्र रही।

मुजफ्फर के चालीस हजार सवार, एक लाख पैदल और हमारी फौज सिर्फ दस हजार, इतने पर भी जीत हमारी।

मुहम्मद अमीन

गुजरात की मिट्टी खानखाना बैरामखाँ के खून से सिंची थी न! उसी खून ने समन्दर होकर बहा दिया मुजफ्फर की सेना को। हा-हा-हा।

[नेपथ्य में दूर पर बहुत से लोगों की बातचीत की आवाज़ सुनाई देती है, जो निकट आ रही है।]

मुहम्मद अमीन

लो, आ रहे हैं, याचक। पर मैं याचक बनने वाला नहीं।

रहिमन याचकता गहे बड़ो छोट होय जात।
नारायन हू को भयो बामन आँगुर गात॥
और रहिमन वे नर मर चुके जे कहुँ माँगन जायँ।

फहीम

पर —उनसे पहले वे मुये जिन मुख निकसत नाहिं॥
हमारे मालिक याचकों को कभी मायूस नहीं करते।

[एक ओर से रहीम का प्रवेश। रहीम युवक हैं, गोरे रंग, भरे हुए शरीर के सुन्दर व्यक्ति। मुख पर दाढ़ी है। सिर पर पगड़ी है, शरीर पर जामा जिसके नीचे पिंडलियों से पैर तक चुस्त पाजामा दिखता है। पैरों में जूते। रहीम को देख मुहम्मद अमीन और मियाँ फहीम झुककर तीन-तीन बार आदाब बजाते हैं।]

रहीम

अच्छा, दूसरों के आने के पहले दीवाना तू आ गया और फहीम तू भी ?

मुहम्मद अमीन

परन्तु, हुजूर ! मैं माँगने नहीं आया हूँ। आपने ही कहा है न,

रहिमन माँगत बड़न की लघुता होत अनूप।
बलिमख माँगन को गये धरि वामन को रूप॥

मैं बावना नहीं हुआ हूँ। देखिये न, वैसा ही ऊँचा पूरा तन्दुरुस्त। **(वह अकड़कर इधर से उधर और उधर से इधर चलता है। रहीम हँस पड़ता है)**

फहीम

हुज़ूर, यह, ले रहे थे, इन नौ रत्नों के नाम, आपको बना रहे थे नवरत्न। कह रहे थे इस तमाम दौलत को गुजरात की जमीन में दफनाया था, बड़े खानखाना ने, जब वे फौत हुए तब जहाँ यह दौलत दफनायी गयी थी वह जगह उन्होंने आपको बता दी थी। और हालाँकि आप उस समय चार वर्ष के ही थे पर आपको याद रही वह जगह। वहीं से खुदवाकर आप ले आये इस तमाम दौलत को जो आज दान में देने वाले हैं।

रहीम

(हँसते हुए) यह है दीवाना। (**कुछ रुककर**) अच्छा, तू तो बावना होकर कुछ नहीं माँगता, पर मैं तो तुझे दे सकता हूँ न। **(जवाहरात की चौकी पर से नवरत्न का एक हार उठाकर मुहम्मद अमीन को देते हुए)**

रहिमन पर उपकार के करत न भारी बीच।
माँस दियो शिवि भूप ने दीन्हों हाड़ दधीच॥

मुहम्मद अमीन

(हार को पहनते हुए) नवरत्न···नवरत्न, रहीम नवरत्न।

रहीम

(**एक मोती के कंठे को उठा फहीम को देते हुए**) फहीम, ले, तू यह ले।

फहीम

(हार लेते हुए ग्रादाब बजाकर)

दीन सबन को लखत है दीनहिं लखे न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखे दीनबन्धु सम होय॥

[नेपथ्य में जो बातचीत का स्वर सुनायी देता था वह ग्रब ग्रत्यन्त निकट ग्रा जाता है ग्रौर भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग बायीं ग्रोर से प्रवेश करते हैं। इनमें हिन्दू, मुसलमान सभी हैं। लोग ग्रा-ग्राकर रहीम को ग्रादाब बजाते हैं। रहीम एक-एक कर लोगों को दान देना ग्रारम्भ करते हैं। थोड़ी ही देर में सारा संग्रह बंट जाता है। जिन्हें जो मिलता है, लेकर नमन कर जाते हैं। केवल एक व्यक्ति रह जाता है।]

वह व्यक्ति

ग्रमरबेल बिन मूल की प्रतिपालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तज खोजत फिरिये काहि॥

रहीम

ग्रच्छा, तुम्हें कुछ नहीं मिला? ठहरो! (शीघ्रता से प्रस्थान ग्रौर एक सोने का रत्नजटित कलमदान लेकर प्रवेश। वह कलमदान इस व्यक्ति को देते हैं) यही मेरे पास बचा था, लो, तुम इसे ले लो।

वे रहीम नर धन्य हैं पर उपकारी ग्रंग।
बाँटनवारे को लगै ज्यों मेंहदी को रंग॥

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान

फतहपुर सीकरी में अकबर का दीवानेखास

समय

रात्रि

[दीवानेखास का एक भाग दिखायी देता है। और उसी के बाहर खुला हुआ वह हिस्सा जिसमें वह विशाल चौपड़ अंकित है जिस पर अकबर जीवित गोटों से चौपड़ खेलता था। दीवानेखास लाल पत्थर का बना हुआ है। और उसी पत्थर की चौपड़। चाँदी-सोने के गंगा-जमनी सिंहासन पर अकबर बैठा हुआ है। सिंहासन पर चाँदी-सोने की गंगा-जमनी चौकों पर जरी का शामयाना तना है, जिसमें मोतियों की झालरें लगी हैं। दोनों ओर दो बाँदियाँ अकबर पर चँवर डुला रही हैं। अकबर की अवस्था इस समय लगभग ४० वर्ष की है। सिंहासन के नीचे बिछावन पर कुछ पुरुष बैठे हुए हैं। तानसेन सिंहासन की ओर मुँह किये गा रहा है। तानसेन के निकट कुछ अन्य भारतीय, ईरानी और तुर्क गायक और गायिकाएँ बैठी हैं। अनेक मुसाहब, शरीर-रक्षक और भृत्य हाथ बाँधे इधर-उधर खड़े हुए हैं।]

अली री तोहे कहा पर घर की बातन सों
पिया मेरे आय के न आय के न आवेंगे।
हों इनके जाऊँ केधों वे ही मेरे आवेंगे
हों इन्हें मनाऊँ केधों वे मोहि को मनावेंगे।
हों इन प्यारी केधों वही मेरो प्यारो लागे
आप रस लेले लाल वे ही रस लावेंगे।
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक,
हों इन्हें रिझाऊँ केधों वे मोहिं रिझावेंगे॥

दरबान

(कोरनिस कर) आलीजाह! सूबेदार अब्दुर रहीम खाँ आ गये हैं, खिदमत में हाजिर होना चाहते हैं।

अकबर

हाँ, उन्हें आदरपूर्वक ले आओ।

[दरबान का प्रस्थान और रहीम के साथ पुनः प्रवेश। रहीम के संग उसके भी कुछ मुसाहब और शरीर-रक्षक हैं। एक भृत्य के सिर पर बहुमूल्य वस्त्र से ढका एक थाल है। रहीम के आते ही अकबर को छोड़ दीवानेखास के शेष सब लोग खड़े हो जाते हैं। रहीम आगे बढ़ एक घुटना टेक अकबर को कोरनिस करता है। और अपने भृत्य के सिर पर कपड़े से ढके हुए थाल का कपड़ा उठा उसे अकबर के चरणों के समीप रखता है। यह थाल रत्नों से भरा हुआ है जो रहीम बादशाह की नज़र करने को लाया था। इसके बाद रहीम सब प्रमुख सभाषदों के सामने जा-जा उनकी आदाब बजाता है। ये सब लोग रहीम को गले लगाते हैं।]

अकबर

बैठो, मिर्जा खाँ। और बैठें बाकी सब लोग भी। मॉबदौलत को निहायत खुशी हुई तुम्हारे आने से।

[रहीम और सब लोग जो पहले बैठे हुए थे फिर बैठ जाते हैं।]

अकबर

मिर्जा खाँ! इस वक्त तुम ऐसी विजय करके आये हो जिसका हाल सुन मॉबदौलत को खान बाबा की बहादुरी के अनेक दास्तान याद आते हैं। मैं इस फतह पर तुम्हें मुबारिकबाद देता हूँ।

रहीम

(खड़े होकर फिर कोरनिस करके) यह सब जहाँपनाह के इकबाल

से हुआ है। (**फिर बैठ जाता है।**)

अकबर

मुजफ्फर के चालीस हजार सवार, एक लाख पैदल और शाही सेना केवल दस हजार ! इतने पर भी ऐसी जीत ! तुम क्या जादूगर हो, मिर्जा खाँ !

रहीम

मैंने निवेदन किया न। यह सब आलीजाह का इकबाल है।

अकबर

मॉबदौलत को इस बात की भी कम खुशी नहीं है कि जब हमने सिर्फ उन्नीस साल की उम्र में तुम्हें गुजरात का सूबेदार बनाया उस समय हमने आदमी की ठीक परख की थी और चाहे उस वक्त इतनी कम अवस्था में तुम्हें सूबेदारी का पद देने से राज्य के पुराने वफादारों को अच्छा न लगा हो, पर आज वे यह मानेंगे कि मॉबदौलत ने कोई ग़लती नहीं की थी।

कुछ मुसाहिब

(**एक साथ**) हरगिज नहीं, जहाँपनाह, हरगिज नहीं।

अकबर

(**अबुलफज़ल से**) अबुलफज़ल ! मैं मिर्जा खाँ को इनके वालिद खानखाना बैरामखाँ की ही 'खानखाना' पदवी बख्शता हूँ, और 'पंचहजारी मनसबदारी'।

अबुलफज़ल और कुछ मुसाहिब

(**एक साथ**) बहुत खूब जहाँपनाह, बहुत खूब !

[**रहीम फिर उठकर कोरनिस करता है और पुनः बैठ जाता है।**]

अकबर

और देखो, इस दुनियाँ में रत्नों की सबसे ऊँची जगह है। भारतीय तहज़ीब में इन रत्नों में नवरत्न सबसे ऊँचे माने जाते हैं, मॉबदौलत

आज अपनी सभा में नवरत्नों की एक जमात को बनाते हैं। इस जमात में होंगे नवरत्नों के नाम—अबुलफज़ल, शेख फैज़ी, बीरबल, टोडरमल, तानसेन, मानसिंह, अब्दुर रहीम खाँ, खान आज़म कोका, और मुल्ला दो प्याज़ा।

[नवरत्न खड़े हो-होकर कोरनिस कर अपनी-अपनी जगह बैठते जाते हैं। कुछ देर निस्तब्धता।]

अकबर

(तानसेन से) हाँ, तो फिर रत्न तानसेन जी ! इस खुशी में गाना न सुनाइयेगा ?

तानसेन

(उठकर कोरनिस कर) इर्शाद आलीजाह !

[तानसेन सूरदास का निम्नलिखित पद गाता है।]

जसुदा बार-बार यों भाखै
है कोई ब्रज हितू हमारौ चलत गुपालहिं राखै।
कहा काज मेरे छगन मगन को नृप मधुपुरी बुलायौ।
सुफलक सुत मेरे प्राण हनन को काल रूप ह्वै आयौ।
बरु ये गोधन हरो कंस सब मोहि बंदी ले मेलौ।
इतने ही सुख कमल नयन मेरी अँखियन आगे खेलौ।
बासर बदन बिलोकत जीवों निसि निज अंक में लाओं।
तेहि बिछुरत जो जीवों कर्मवश तौ हँसि काहि बुलाओं।
कमल नयन गुण टेरत-टेरत अधर बदन कुम्हिलानी।
सूर कहा लगि प्रकट जनाऊँ दुखित नन्दजू की रानी॥

अकबर

(गान पूर्ण होने पर) तानसेन जी ! यहाँ बार-बार शब्द का क्या अर्थ है ?

तानसेन

जहाँपनाह ! यहाँ बार-बार शब्द अनेक मर्तबा के मतलब में आया है।

अकबर

(**शेख फैजी से**) आप बतलाइये, शेख फैजी !

शेख फैज़ी

हुज़ूर, बार-बार का अर्थ यहाँ रोना है। याने जशोदा रो-रोकर कहती हैं।

अकबर

(**बीरबल से**) आप भी बताइये, राजा बीरबल जी !

बीरबल

आलीजाह ! यहाँ बार-बार का अर्थ द्वार-द्वार है। अर्थात् यशोदा जी प्रत्येक द्वार पर कहती फिरती हैं।

अकबर

(**खान आज़म कोका से**) नवाब खान आज़म कोका ! आप भी कुछ फरमाइये ?

खान आज़म कोका

हुज़ूर, मेरी समझ में तो यहाँ बार-बार का अर्थ दिन-दिन है; याने प्रतिदिन यशोदा कहती है।

अकबर

(**रहीम से**) और तुम्हारी समझ में, मिर्जा खाँ ?

रहीम

मेरी समझ में जहाँपनाह, यहाँ बार-बार का अर्थ है, रोम-रोम; याने यशोदा का रोम-रोम कह रहा है।

अकबर

काव्य में एक ही शब्द के इतने लोगों ने कितने अर्थ निकाल डाले !

रहीम

हुज़ूर, कवि अपने कौशल से कहीं-कहीं ऐसे लफ्ज़ रख देता है जिसके अर्थ संस्कृत की उक्ति "भिन्नरुचिर्हि लोकः" के अनुसार हर आदमी

अपने विचार के मुताबिक करता है। तानसेन गायक हैं, इन्हें बार-बार एक ही पद को अलापना पड़ता है, इसलिये इन्होंने बार-बार का अर्थ किया अनेक मर्तबा। शेख फैज़ी साहब सच्चे शायर ठहरे, इन्हें सिवा नौह-गिरी अर्थात् रोने के और काम ही क्या? राजा साहब द्वार-द्वार घूमने वाले ब्राह्मण हैं, इससे इन्होंने बार-बार का अर्थ द्वार-द्वार कह डाला। नवाब साहब हैं नजूमी। उन्हें तिथि और वार समझ में आया। पर असल में वही अर्थ ठीक है जो मैंने निवेदन किया।

[अकबर का अट्टहास। सारी सभा हँस पड़ती है। इसके बाद कुछ देर निस्तब्धता।]

अकबर

अच्छा, तो अब चौपड़ जमे।

[अकबर उठते हैं, सारी सभा उठती है। बाहर की चौपड़ पर लाल, हरे, पीले और काले जरी के वस्त्र पहने चार-चार तरुणियाँ गोटों की जगह आती हैं। लाल वस्त्रों वाली युवतियाँ माणिक, हरे वस्त्र वाली पन्ने, पीले वस्त्र वाली पोखराज और काले वस्त्र वाली नीलम के आभूषण पहने हैं। चौपड़ के एक ओर अकबर और उसके सामने बीरबल तथा दूसरी ओर अबुलफज़ल और उसके सामने रहीम बैठते हैं। अकबर पांसे उठाकर उन्हें हिलाकर फेंकता है, खेल आरम्भ होता है।]

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान

गुजरात में अहमदाबाद के निकट सरखेज गाँव की सीमा पर
साबरमती के किनारे फतहबाग का एक भाग

समय

सन्ध्या

[आकाश में मेघ हैं। कभी-कभी बिजली चमकती है और उस चमक के पश्चात् ही बादलों की गरज सुन पड़ती है। पीछे की ओर दूर पर साबरमती का बहाव दृष्टिगोचर होता है। उसके आगे फतहबाग का एक हिस्सा दीख पड़ता है। आम, मोरपंखी आदि के छोटे-छोटे वृक्षों से जान पड़ता है कि बाग को लगे बहुत समय नहीं बीता। गुलाब, मोगरा, जुही, चमेली आदि के वृक्ष काफी बड़े हो गए हैं और गुलाब तथा जुही फूले हुए भी हैं। एक ओर लाल पत्थर का चबूतरा है जिस पर सफेद संगमरमर की बेंचें हैं। रमजाना इधर-उधर घूमती हुई गुनगुना रही है। रमजाना सुन्दर युवती है। शलवार पहने है, शलवार पर कुरता है और कुरते पर दुपट्टा है।]

[नेपथ्य में सुन पड़ता है]

लहरत लहर लहरिया लहर बहार।
मोतिन जरी किनरिया बिछुरे बार॥
पहिरति चूनि चुनरिया भूषन भाव।
नैननि देत कजरवा फूलनि चाव॥

[रमजाना मुस्कराती हुई एक वृक्ष की आड़ में खड़ी होती है। मुहम्मद अमीन गाते हुए आता है।]

मुहम्मद अमीन

चूनत फूल गुलववा डार कटील।
टुटिगा बन्द अंगियवा फट पटनील॥

जस मदमातुल हथिया हुमकत जात ।
चितवति जात तरुनियाँ मन मुसुकात ।।

[रमजाना की हँसी नहीं रुकती और जोर से हँसते हुए वृक्ष की ओट से बाहर आती है ।]

मुहम्मद अमीन

रमजान का महीना, उसमें रमजाना ! हा–हा–हा ।

रमजाना

सचमुच, तू दीवाना है ।

मुहम्मद अमीन

कैसा सुन्दर काफिया मिला रमजाना और दीवाना । हा-हा-हा । पर देख ! तू पेड़ की ओट से तब निकली जब मैंने नायिकाभेद की कुलटा का वर्णन किया—जस मदमातुल हथिया हुमकत जात ।

रमजाना

चल, मुये, आग लगे तेरे मुँह में । मुझे कुलटा कहता है । होगी तेरी औरत कुलटा ।

मुहम्मद अमीन

मेरी औरत हो तब तो ! हाँ, होनेवाली जरूर है । हा-हा-हा ।

रमजाना

(कुछ उत्सुकता से) कौन ?

मुहम्मद अमीन

मैं क्यों बताऊँ !

[फहीम का प्रवेश]

फहीम

अच्छा, प्रेमालाप हो रहा है !

[नेपथ्य में गान की ध्वनि सुन पड़ती है ।]

मुहम्मद अमीन

बेगम साहिबा आ रही हैं। उसके बाद आयँगे नवरत्न सभा के एक रत्न सूबेदार अब्दुर रहीम खाँ। हा-हा-हा। मुजफ्फर पर की फतह की खुशी में जो नवरत्नों का दान हुआ था उस वक्त मैंने कहा था न! नव-रत्न, हमारे मालिक रहीम नवरत्न!

रमजाना

(**कुछ आश्चर्य से**) अच्छा!

फहीम

(**सिर हिलाते हुए**) हाँ, यह तो इसने कहा था।

रमजाना

अच्छा! तो यह नजूमी भी है!

मुहम्मद अमीन

नजूमी! ज्योतिषी! मैं···मैं···हा-हा-हा···मैं हूँ दीवाना!··· दीवाना रमजाना···रमजाना···दीवाना। हा-हा-हा। (**शीघ्रता से प्रस्थान**)

फहीम

कुछ अजीब-सा आदमी यह ज़रूर है। अच्छा, देखो मेरी नमाज़ का समय हो रहा है।

रमजाना

हाँ, राजपूत से मुसलमान होने के बाद तुम तो छहों वक्त बराबर नमाज़ पढ़ा करते हो।

[**नेपथ्य का गान नज़दीक आता है।**]

फहीम

अब हमें यहाँ से हट भी जाना चाहिए क्योंकि बेगम साहिबा यहीं आ रही हैं।

[**दोनों का प्रस्थान। माहेबानू का गाते हुए प्रवेश। वह गौर वर्ण की अत्यन्त सुन्दर युवती है। वह रेशमी सलवार पहने है, सलवार के ऊपर**

उसी प्रकार के कपड़े का कुरता और कुरते के ऊपर दुपट्टे की ओढ़नी है। कपड़ों पर सुनहरी काम है। अंगों पर रत्नजटित भूषण हैं]

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज पर आवै।
कमल नयन को छाँड़ि महातम और देव को ध्यावै।
परम गंग को छाँड़ि पियासो दुर्मति कूप खनावै॥
जिन मधुकर अंबुज रस चाख्यो क्यों करील फल खावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै॥

[गाते हुए माहेबानू एक गुलाब का फूल हाथ में लिये उसे रह-रह कर सूँघती है। गान पूर्ण होते-होते रहीम का प्रवेश।]

रहीम

बाग अच्छा लग गया न बेगम !

माहेबानू

हाँ, गुलाब और जूही तो फूले भी हैं।

रहीम

(गुलाब और जूही की ओर देख आकाश की ओर देखते हुए) बरसात का मौसम सचमुच इस देश में सुन्दर होता है। बादशाह बाबर, जिन्हें यह मुल्क जरा भी पसन्द न आया था, उन्होंने भी वर्षा ऋतु की बड़ी तारीफ की है।

माहेबानू

और तुमने क्या कम ?

लगत अषाढ़ कहत हो चलन किशोर।
घन घुमेड़ चहुँ ओर न नाचत मोर॥
उमड़ि-उमड़ि घन घुमड़े दिसि विदिसान।
सावन दिन मनभावन करत पयान॥
भादों निस अँध अटिया घर अँधियार।

विसर्यो सुघर बटोही शिव आगार ॥
साँवन आँवन कहिगे स्याम सुजान।
अजहुँ न आये सजनी ! तरफत प्रान ॥

[दोनों संगमरमर की बैंच पर बैठ जाते हैं ।]

रहीम

मुझे सच्चा सुख इसी तरह के साहित्य-सृजन और श्रीकृष्णचन्द आनन्द की याद में मिलता है ।

माहेबानू

वह तो देख ही रही हूँ ।

रहीम

देखो, बेगम ! जो वालिद को इतनी अधिक अवस्था में मिला था वह और उससे भी ज्यादा मुझे इतनी कम उम्र में मिल गया ।

माहेबानू

वह खानखाना हुए थे बुढ़ापे में, तुम हो गए नौजवानी में ।

रहीम

कुछ घटनाएं ही इस तरह घटीं जब उन्नीस बरस का था इसी गुजरात का सूबेदार बनकर आया । मुजफ्फर ने जब फिर सिर उठाया फिर भेजा गया यहाँ, एक छोटी-सी फौज के साथ ।

माहेबानू

हाँ, तुम्हारी फौज थी सिर्फ दस हजार, और उसके चालीस हजार सवार और एक लाख पैदल थे ।

रहीम

और हिम्मत भी नहीं रही थी हम लोगों की लड़ने की । हम रास्ता देख रहे थे मालवे के अमीरों की सेना का । दौलतखाँ लोदी ने जरा-सी बात कह दी, या तो अकेले फतह करूँ नहीं तो अज्ञात अवस्था में जीने से मर जाना अच्छा है । मुझे उसकी बात कुछ ऐसी जँची कि मैंने बोल

ही दिया धावा । मर जाना ही निश्चय जान पड़ता था पर जीत गया ।

माहेबानू

दुनियाँ के इतिहास में एक तरफ इतनी बड़ी सेना और दूसरी तरफ इतनी छोटी सेना में शायद ही कभी लड़ाई हुई हो, और फिर इतनी बड़ी सेना पर इतनी छोटी सेना की जीत एक अजीब बात है ।

रहीम

तो उन्नीस साल की अवस्था में मुझे जो सूबेदारी का पद दिया गया था वह ठीक व्यक्ति को दिया गया था यह मैंने सिद्ध कर दिया । खान-खाना हो गया, पंच हजारी मनसबदार, नवरत्नों में एक रत्न । और इन नौ रत्नों में जो सबसे ऊँचा माना जाता है, इस अबुलफज़ल की मुझ पर इतनी मुहब्बत ।

माहेबानू

हाँ, तुमने कहा था, अबुलफज़ल के लिए ईरान के बादशाह शाह अब्बास कहा करते हैं कि जितना डर मुझे अबुलफज़ल की कलम का लगता है उतना अकबर की तलवार का नहीं ।

रहीम

फिर इतना दान दिया जितना शायद ही किसी ने दिया हो ।

माहेबानू

सब कुछ दे डाला । एक को न मिला था उसे अपना कलमदान तक दे दिया ।

रहीम

पर बावजूद इस सबके मन शान्त नहीं । कलम और तलवार का झगड़ा है ।

माहेबानू

जब दो चीजें समान रूप से प्रबल रहती हैं और दोनों समान महत्व की, तब यह झगड़ा शायद स्वाभाविक होता है ।

रहीम

एक तरफ आकर्षण है ऊँचे ऊँचे राजनैतिक पदों का और दूसरी तरफ साहित्य-सृजन का। एक तरफ खींचती रहती है यह सूबेदारी, इसका सारा वैभव, इमारतें, बाग, वस्त्राभूषण, दावतें और न जाने क्या-क्या, और दूसरी तरफ गोस्वामी तुलसीदास का सारा रामभक्ति का संत जीवन। क्या कहूँ !

[माहेबानू गाती है।]

कबहुँक हौं इहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ कृपाल कृपा तें सन्त सुभाव गहौंगो॥
जथा लाभ सन्तोष सदा काहू सौं कछु न चहौंगो।
परहित निरत निरन्तर मन क्रम वचन नेम निबहौंगो॥
परुष वचन अति दुसह स्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
विगत मान सम सीतल मन परगुन औगुन न कहौंगो॥
परिहरि देह जनित चिन्ता दुख सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसीदास प्रभु इहि पथ रहि अविचल हरिभक्ति लहौंगो॥

यवनिका

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान

आगरे में रहीम की हवेली का बैठकखाना

समय

प्रातःकाल

[बैठकखाना शाही ढंग से से बना और सजा है। यों तो बैठकखाने की लाल पत्थर की दीवारें, स्तम्भ, महराबें, दीवालों पर के चित्र, जमीन पर का कालीन और उस पर सजा हुआ सभी सामान दर्शनीय है परन्तु सबसे अधिक ध्यान आर्कषित करने वाले दो चाँदी-सोने के गंगा-जमनी सिंहासन हैं। एक सिंहासन बड़ा है, आदमी के बैठने का। उस पर जरदोजी के काम के मखमली गद्दे तकिए हैं। सिंहासन के ऊपर चाँदी-सोने की गंगा-जमनी चोबों पर जरी का शामयाना खिचा है, जिसमें मोतियों की झालरें लगी हैं। सिंहासन के पीछे एक ऊँची चौकी पर जरी का छत्र रखा है और आस-पास दो ऊँची चौकियों पर दो चाँदी-सोने की गंगा-जमनी डांडियों वाले सुरागाय की पुच्छ के चँवर रखे हैं। उसके सामने का दूसरा सिंहासन छोटा है जिस पर श्रीकृष्ण और राधा की मूर्तियाँ विराजमान हैं। इन मूर्तियों पर रत्न-जटित शृंगार है। इस सिंहासन के सामने नमाज पढ़ने का आसन है। रमजाना झाड़न से कमरे की चीजों को साफ करती हुई गुनगुना रही है।]

[अमीन गा-गाकर एक दोहा कहते हुए आता है।]

मुहम्मद अमीन

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाइ।
टूटे से फिर ना मिले मिले गाँठ परि जाइ॥

[मुहम्मद अमीन का दोहा सुन रमजाना जोर से हंस पड़ती है ।]

मुहम्मद अमीन

ओ, हो ! मैंने तो देखा ही नहीं था, तो आप यहीं हैं। हा-हा-हा ।

रमजाना

जी, हाँ ।

मुहम्मद अमीन

और मालिक के इस दोहे पर हँस रही हो ?

रमजाना

तो क्या रोऊँ ?

मुहम्मद अमीन

इस वक्त जैसी आपकी दशा है उसे देखते हुए तो रोना ठीक ही जान पड़ता है—हा-हा-हा । और आपको नहीं तो कम-से-कम मुझे तो रोना ही चाहिये, क्योंकि आपकी प्रीति है मालिक के एक दोहे जैसी ।

रमजाना

किस दोहे जैसी ?

मुहम्मद अमीन

रहीम प्रीति न कीजिये जस खीरा ने कीन ।
ऊपर से तो दिल मिला भीतर फाँकें तीन ।।

हा-हा-हा···और मेरी प्रीति जानती है कैसी है ?

रमजाना

(हँसते हुए) कैसी ?

मुहम्मद अमीन

(आँखें बन्द कर हाथ उठा अत्यन्त गम्भीरता से)

रहिमन यह न सराहिये लेन देन कै प्रीत ।
प्रानहि बाजी राखिये हारि होइ कै जीत ।।

[रमाजाना जोर से हँस पड़ती है ।]

मुहम्मद अमीन

(आँख खोलकर) फिर हँसती है ? जान पड़ता है, गाँठि ही गाँठि है, रस नहीं।

जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं यह जानत सब कोय।
मँडये तर के गाँठि में गाँठि गाँठि रस होय ॥

और भी सुन—

रहिमन खोजो ऊख में कहाँ न रस कै खानि।
जहाँ गाँठि तहँ रस नहीं यही प्रीति कै हानि॥

हा-हा-हा···

रमजाना

तू सचमुच दीवाना है।

मुहम्मद अमीन

और तू रमजाना ! ···रमजाना दीवाना···दीवाना रमजाना। हा-हा-हा।

[मियाँ फहीम का प्रवेश]

फहीम

अच्छा ! फिर प्रेम-संभाषण चल रहा है ! मैं कहता हूँ तुम दोनों शादी क्यों नहीं कर लेते ?

मुहम्मद अमीन

शादी ! हा-हा-हा शादी !

रहिमन ब्याह बियाधि है सकहु तो जाहु बचाय।
पाइन बेरी परत है ढोल बजाय-बजाय ॥

रमजाना

और मैं इस दीवाने से शादी करूँ ? फिर यह दीवाना ही नहीं है, यह है उस रकीदा के समान जिसके निस्बत हमारे मालिक कहते हैं—

खीरा सिर धरि काटिये मलिये नोन लगाय।
करुवे मुख कहँ चाहिये रहिमन यही सजाय॥

मुहम्मद अमीन

जान पड़ता है तुझमें केवल गाँठि ही गाँठि नहीं है पर तू दुर्गुणों की भी खान है।

रहिमन लाख भली करो अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत पय पियतहू साँप सहज धरि खाय॥

हा-हा-हा।

फहीम

अच्छा, यहाँ से चले चलो। मालिक आ रहे हैं। (प्रस्थान)

मुहम्मद अमीन

दीवाना रमजाना...रमजाना दीवाना। हा-हा-हा। (शीघ्रता से प्रस्थान)

[रमजाना इसी तरह कमरे की चीजों को साफ करती है। रहीम का एक याचक के साथ प्रवेश। रहीम को देखकर रमजाना का प्रस्थान। रहीम सिंहासन पर बैठता है और वह याचक उसी के निकट एक चौकी पर।]

रहीम

हाँ, तो फिर से तो अपनी कविता पढ़ो।

याचक

(यद्यपि कविता में न कोई मात्राओं का ठिकाना है, न वृत्तों का और तुक भी नहीं मिली है, तथापि गा-गाकर)

हे उदार खानखाना।
एक चन्द्रमुखी मेरी प्यारी है,
वह जान माँगे तो सोच नहीं है,
रुपया माँगती है यही मुश्किल है।

(खूब जोर से हँसते हुए) कितना रुपया माँगती है?

याचक

एक लाख।

रहीम

(जोर से पुकारते हुए) फहीम, ओ फहीम !

[फहीम का शीघ्रता से प्रवेश । वह आदाब बजाता है ।]

रहीम

(फहीम से) देख तो, इस युवक को एक लाख छै हजार रुपया दे दे। (याचक से) एक लाख तुम्हारी माशूका के लिये है, छै हजार तुम्हारे खुद के भोग-विलास के लिए ।

याचक

(खड़े होते हुए गद्‌गद् स्वर से) यह है फय्याजी ! यह है उदारता !

[फहीम के साथ आदाब बजाते हुए याचक का प्रस्थान ।]

रहीम

(जोर से) हाँ देख, फहीम !

[फहीम पुनः आता है ।]

रहीम

उस बरामदे में जो लोग बैठे हैं उनमें से एक एक कर सबको भेजने का प्रबन्ध करता जा ।

फहीम

जैसी आज्ञा ।

[फहीम का प्रस्थान और कुछ ही देर में एक दूसरे खूब मोटे याचक का प्रवेश ।]

याचक

(जमीन तक झुककर दोनों हाथों से प्रणाम कर) मैं उदयपुर से आयो हूँ । म्हारो नाम है आसकरण, पण हूँ मोटो हूँ इणे सूं मने लोग जाड़ा महड़ू कहे हैं । आपके ताईं चार दोहा बनाके लायो हूँ ।

रहीम

बैठो कविवर, इस चौकी पर बैठो, और कहो अपने दोहे ।

याचक

खानखाना नवाब रे, मोहि अचम्भो एह।
मायो किम गिरि मेरु मन, साढ़ तिहत्थी देह॥
खानखाना नवाब रे, खांडै आग खिवन्त।
जल वाला नर प्राजलै, तृण वाला जीवन्त॥
खानखाना नवाब रा, अदमगीरी छत्र।
यह ठकुराई मेर गिर, मनी न राई मत्र॥
खानखाना नवाब रो, अड़िया भुज ब्रह्मण्ड।
पूठे तो है चण्डिपुर, धार तलै नवखण्ड॥

रहीम

सुन्दर दोहे हैं। अच्छा जाड़ा जी, मैंने भी आपको देखकर एक दोहा बना डाला। उसे आप भी सुन लीजिए—

धर जड्डी अम्बर जडा, जड्डा महडा जोय।
जड्डा नाम अलाहदा, और न जड्डा कोय॥

और इस दोहे के साथ लीजिए अपने एक-एक दोहे पर एक-एक लाख पुरस्कार।

जाड़ा

नहीं, खानखाना जी, मैं रूपिया लेने नहीं आयो हूँ।

रहीम

तो ?

जाड़ा

महाराणा उदयसिंहजी रा कुँवर और परतापसिंहजी रा भाई सीसोदिया जगमाल जी अपणा भाई सूं रूठने घर छोड़ दियो है। उनरे वास्तां जागीर चाही जे।

रहीम

(कुछ विचारकर) अच्छी बात है। उनके लिए जागीर का इन्त-

जाम हो जायगा। और मेवाड़ का ही जहाजपुर का परगना उन्हें बादशाह से दिला दूँगा जो इस समय बादशाह के कब्जे में आ गया है।

जाड़ा

(उठते हुए) जय हो, खानखाना जी की जय हो।

[पुनः उसी प्रकार जमीन तक झुक दोनों हाथों से प्रणाम कर प्रस्थान। कुछ ही देर में एक तीसरे याचक का प्रवेश। वह ब्राह्मण दीखता है और दोनों हाथों से नमस्कार करता है।]

याचक

खानखाना साहब, मुझे गोस्वामी तुलसीदास जी ने एक दोहे का एक चरण लिखकर आपके पास भेजा है। (**कागज़ का एक टुकड़ा आगे करता है।**)

रहीम

(**सिंहासन से उठकर दोनों हाथ बढ़ा कागज़ लेते हुए**) गोस्वामी जी ने···गोस्वामी जी ने ? धन्य मेरा भाग्य ! मैं सचमुच बड़ा खुशकिस्मत हूँ। (**पुनः सिंहासन पर बैठते हुए कागज़ पढ़ता है।**)

सुरतिय नरतिय नागतिय,
अस चाहत सब कोय।

अच्छा ! ब्राह्मण देवता, बैठिये, क्या आज्ञा है ?

ब्राह्मण

(**सिंहासन के निकट की कुर्सी पर बैठते हुए**) बहुत गरीब ब्राह्मण हूँ। कन्या का विवाह करना है।

रहीम

अभी प्रबन्ध करता हूँ। (**जोर से**) फहीम ! ओ फहीम !

[फहीम का प्रवेश। जब फहीम आता है, उस समय रहीम एक कागज़ पर कुछ लिख रहा होता है। अतः वह खड़ा हो जाता है।]

रहीम

(ब्राह्मण के दिये हुए कागज़ और अपने लिखे हुए कागज़ को देखते हुए) देखिए द्विजराज! गोस्वामी जी के दोहे के चरण का उत्तर मैं लिखकर दे रहा हूँ। उसे मेरी तरफ से आप गोस्वामी जी के भेंट कर दीजियेगा और उनसे यह भी कहियेगा कि उनके दर्शन की बड़ी अभिलाषा है। भगवान रामचन्द्र मेरी अभिलाषा को कभी न कभी पूर्ण करेंगे ही। गोस्वामी जी के दोहे के चरण हैं—

सुरतिय नरतिय नागतिय
अस चाहत सब कोय।

मेरे दोहे की पूर्ति है—

गोद लिये हुलसी फिरे
तुलसी सो सुत होय।

(फहीम से) ब्राह्मण देवता को इनकी लड़की की शादी के लिए एक लाख रुपया दे दे। **(ब्राह्मण से उसे अपना लिखा कागज़ देते हुए)** कहिये, इतने में विवाह हो जायेगा न?

ब्राह्मण

बहुत अच्छी तरह, बहुत अच्छी तरह खानखाना साहब। मेरा एक-एक रोम आपको आशीर्वाद देता है। **(खड़ा होता है।)**

फहीम

हुजूर, महाकवि गंग पधारे हैं।

रहीम

(सिंहासन से उठते हुए) अच्छा! महाकवि गंग ने कृपा की है! चलो, मैं खुद उनका स्वागत कर उन्हें ले आता हूँ।

[तीनों का प्रस्थान और गंग कवि के साथ रहीम का प्रवेश। रहीम गंग कवि को सिंहासन पर बिठाकर उन्हीं के निकट बैठता है।]

गंग

तो, आपने आते-आते ही रास्ते में मेरा छप्पय देख डाला।

रहीम

आपके समान महाकवि मेरे सम्बन्ध में कुछ लिखे और मैं फौरन इसे न पढ़ूँ। (**एक कागज़ पर से पढ़ते हुए**) क्या भाव हैं, क्या भाषा है !

चकित भँवर रहि गयो गगन नहिं करत कमल वन।
अहि फनि-मनि नहिं लेत तेज नहिं बहत पवन घन॥
हंस मानसर तज्यो चक्क चक्की न मिले अति।
बहु सुंदर पद्मिनी पुरुष न चहे न करे रति॥
खलभलित सेस कवि गंग भनि अमित तेज रवि रथ खस्यो।
खानानखाना बैरम-सुवन जिदिन कोप करि तँग कस्यो॥

इस छप्पय पर मैं अपना सर्वस्व आपके चरणों में भेंट करूँ तो भी कम है। गुजरात में जब मैंने मुजफ्फर पर चढ़ाई की और उस लड़ाई में मैं जीता तब मैंने अपना सब कुछ दान कर दिया था, लेकिन अब हिन्दोस्तान की राजधानी आगरे का निवासी हो गया हूँ, इसलिए इज्जत आबरू के साथ रहने के लिए कुछ चाहिये ही। अतः सब कुछ देने को तो हिम्मत इस वक्त नहीं पा रहा हूँ, परन्तु छै पंक्तियों का छप्पय है और एक-एक पंक्ति पर छै-छै लाख इस तरह इस छप्पय पर छत्तीस लाख रुपया चरणों में एक तुच्छ भेंट है।

गंग

(**गद्गद् स्वर से**) क्या विनम्रता है···क्या विनम्रता !

सीखे कहाँ नवाबजू ऐसी देनी देन।
ज्यों ज्यों कर ऊँचे करा त्यों त्यों नीचे नैन॥

रहीम

आप तो आशुकवि हैं, फौरन दोहा रच डाला। आपकी इस आशु कवित्व की शक्ति से ही शायद आपका दोहा सुनते-सुनते इसके जवाब में

मेरा भी एक दोहा बन गया।

देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पै धरैं याते नीचे नैन॥

गंग

(**उठते हुए**) वाह...वाह, धन्य है...धन्य है खानखाना आपको। और भी कुछ लोग बैठे हैं, इसलिए इस वक्त आपका बहुत समय न लूँगा।

[**रहीम भी खड़ा हो जाता है। दोनों का प्रस्थान। रहीम एक अन्य वृद्ध याचक के लाथ लौटकर आता है।**]

रहीम

(**सिंहासन पर बैठते हुए**) हाँ, तो तुमने कभी एक लाख रुपये का ढेर नहीं देखा ?

याचक

हाँ, खानखाना साहब। जीवन में अब यही एक साध रह गयी है।

रहीम

और, तुम वह ढेर सिर्फ देखना चाहते हो ?

याचक

(**कुछ सकपकाते हुए**) हाँ,·हाँ...फिर...फिर जैसा आप...

रहीम

(**बीच ही में हँसकर**) नहीं...नहीं उस ढेर को देख भी लो और ले भी जाओ।

[**फहीम का शीघ्रता से प्रवेश।**]

फहीम

हुजूर, बादशाह सलामत तशरीफ ला रहे हैं।

रहीम

(**सिंहासन से उठते हुए कुछ आश्चर्य से**) अच्छा, उनका स्वागत

करता हूँ, तुम इसे एक लाख रुपये का ढेर लगाकर दिखा दो और उस ढेर का कुल रुपया इसे ही दे दो।

[तीनों का प्रस्थान। कुछ ही देर में रहीम का अकबर बादशाह और अकबर के साथ इसके कई मुसाहबों, शरीर-रक्षकों तथा नौकरों के साथ प्रवेश।]

रहीम

बड़ी भारी नवाजिश की जहाँपनाह ने इस गरीबखाने में पधार कर।

अकबर

बहुत दिनों से मॉवदौलत तुम्हारी इस हवेली और यहाँ की सजावट को देखना चाहते थे। क्योंकि बहुत तारीफ सुनी थी इस हवेली और सजावट दोनों की ही। (**चारों तरफ देखता है** ।)

रहीम

यह सब हुजूर का ही है।

अकबर

(**बड़े सिंहासन, इस पर के शामयाने, उसके पीछे रखे हुए छत्र और चंवर देखकर**) खानखाना, यहाँ तो वे सभी सामान मौजूद हैं। मॉबदौलत ने शिकायत सुनी थी कि खानखाना अपनी हवेली में बादशाही चिन्हों को भी रखते हैं।

रहीम

(**कुछ आश्चर्य से**) शिकायत ! शिकायत कैसी जहाँपनाह ! यह सिंहासन, इस पर का शामयाना, छत्र और चँवर तो अछूते रखे हुए हैं जिससे अगर आलीजाह तशरीफ लावें तो आपके बैठने के लायक इस गरीबखाने पर जगह तो हो। विराजें हुजूर इस सिंहासन पर, और कृतार्थ करें मुझे। (**जल्दी से सिंहासन के पीछे जा एक हाथ से छत्र उठाता है और दूसरे हाथ से चँवर।**)

[अकबर मुस्कराता हुआ सिंहासन पर बैठता है। रहीम छत्र लगा

चँवर डुलाता है ।]

रहीम

कृतार्थ हुआ आज मैं और यह गरीबखाना तथा यहाँ का तमाम आराइशी सामान, और ये राज-चिन्ह । दूरन्देशी की मैंने इस शाही चिन्हों का बनाकर । नहीं तो आज क्या होता, जहाँपनाह ! कहाँ बिठाता आपको ? फिर यकायक तशरीफ ले आये हुजूर । मँगनी भी मँगाता तो शाही महल से ही न ? पर वह भी तभी हो सकता जब पहले से हुजूर के आने की इत्तला होती । जिसे आपने खानखाना बनाया है, उसकी आज इज्जत बच गयी, आलीजाह !

[अकबर के आने की खबर सुनते ही रहीम के कई आश्रित कवि और नौकर आदि आ जाते हैं और अब ये बादशाह को कोरनिस करते हैं । कुछ का रहीम बादशाह को परिचय कराता है ।]

रहीम

हुजूर ! ये हैं केशवदास, महाकवि और प्रकाण्ड पण्डित । ये हैं शायर 'अर्फी', पूरा नाम ख्वाजा सैयद, बड़े नाजुक मिजाज । ये हैं 'नवी', पूरा नाम मुल्ला मुहम्मद रजा । ये हैं, हरनाथ, महापात्र नरहरि के पुत्र । और ये हैं एक बुन्देलखण्डी कवि मण्डन । यह हैं, अला कुली और ये हैं मुकन्द ।

अकबर

अच्छा ! तुमने तो कवियों और शायरों की एक जमात इकट्ठी कर रखी है ।

रहीम

आलीजाह की कृपा से कवियों और शायरों की मुझ पर बड़ी इनायत रहती है ।

अकबर

खुद भी कवि हो न ! (कुछ रुककर) अच्छा, अब छत्र और चँवर

तो रख दो। राजा टोडरमल के बाद मुगल राज्य का सर्वोपरि वकालत का ओहदा अभी तक खाली है। वकील, जानते ही हो, बादशाह का प्रतिनिधि माना जाता है।

रहीम

(छत्र और चँवर को यथास्थान रखते हुए) जी, हाँ। मुगल सल्तनत में वकील दरअसल राज्य का महामंत्री होता है।

अकबर

तो खानखाना, आज मॉबदौलत यह ओहदा तुम्हें बख्शते हैं।

[रहीम सिंहासन के आगे आ जमीन तक झुककर कोरनिस करता है।]

अकबर

मॉबदौलत तुम्हारी हवेली और यहाँ की सजावट देखने आये ही थे। इसी के साथ तुम्हें इस ओहदे पर भी बिठाने आये थे।

रहीम

कहाँ तक जहाँपनाह का शुक्रिया अदा करूँ।

अकबर

(सामने के सिंहासन पर कृष्ण और राधा की मूर्ति को देख और उसी सिंहासन के सामने नमाजी आसन को देख कुछ आश्चर्य से) अच्छा ! यह क्या है, खानखाना ? नमाज का कालीन और राधा-कृष्ण की मूर्ति, एक साथ ?

रहीम

आलीजाह यह हुजूर के दीनइलाही का प्रत्यक्ष रूप है।

रहिमन बात अगम्य ह्वै कहन सुनन कै नाहिं।
जो जानत सो कहत नाहिं कहत सो जानत नाहिं॥

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान

आगरे में हसीना की हवेली का शयनागार

समय

रात्रि

[शयनागार उस काल में सम्पन्न रईसों के शयनागार के सदृश बना और सजा है। शयनागार की दीवालों पर काँच का काम है और बड़े-बड़े शीशे लगे हुए हैं। शयनागार की सजावट में सोने-चाँदी का खूब उपयोग है। पलंग के चाँदी के पाये हैं। शयनागार की छत से काँच के झाड़, फानूस, हण्डियाँ, गोले लटक रहे हैं और उनमें जो मोमबत्तियाँ जल रही हैं उन्हीं से कमरा प्रकाशित है। हसीना हाथ में रहीम की एक तस्वीर लिये हुए घूम-घूम कर गा रही है। वह गौर वर्ण की अत्यन्त सुन्दर युवती है। वह रेशमी वस्त्र की सलवार पहने है, उसके ऊपर उसी प्रकार का कुरता है और कुरते पर ओढ़नी। कपड़ों पर सुनहरी काम है। उसके अंगों पर रत्नजटित भूषण हैं।]

हेरी मैं तो प्रेम दीवाणी, मेरा दरद न जाणै कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय।
गगन मंडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होय।
घायल की गति घायल जानै, की जिन लाई होय।
जौहरी की गति जौहरी जानै, की जिन जौहर होय।
दरद की मारी बन बन डोलूँ, वैद मिल्या नहिं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब वैद साँवलिया होय॥

हसीना

(गीत पूर्ण होने पर एक चौकी पर बैठ रहीम की तस्वीर को ध्यान से देखते हुए तस्वीर से ही) कितने··कितने खूबसूरत हो तुम ! सारा

शरीर ढला हुआ सा, वैसा ही चेहरा और चेहरे में ये आँखें तथा आँखों की यह चितवन ! क्या अपनी ही आँखों और अपनी ही चितवन पर तुमने खुद ही लिखा है—

रहिमन मन महराज के दृग सीं नहीं दिवान।
देखि जाहि रीझें नयन मन तेहि हाथ बिकान॥

और भी—

रहिमन चोट्ट सू तीर कै चोट खाइ बचि जाय।
नैन बान कै चोट तें, धन्वन्तरि न बचाय॥

और ऐसा···ऐसा रूप···ऐसी···ऐसी खूबसूरती देख अगर कोई अपना सब कुछ वार दे, अपने को भूल जाए, दुनियाँ की परवाह न करे तो इसमें कुसूर किसका ? कुतुम खुद ही लिखते हो—

रहिमन सो न कछु गने जासों लागे नैन।
सहि के सोच बेसाहियो गयो हाथ कर चैन॥

और भी—

प्रीतम छबि नैनन बसी पर छबि कहाँ समाय।
भरि सराय रहीम लखि आप पथिक फिर जाय॥

इसलिए मेरी हालत हो गयी है तुम्हारे इस कथन के मुआफिक।

बिरह रूप घन तम भयो, अवधि आस उद्योत।
ज्यों रहीम भादों निसा, चमकि जात खद्योत॥

और भी—

जे सुलगे ते बुझ गये बुझे ते सुलगे नाहिं।
रहिमन दोहे प्रेम के बुझि बुझि के सुलगायँ॥

[रहीम का प्रवेश]

रहीम

आपने आज मुझे फिर बुलाया था ?

हसीना

(रहीम की आवाज सुन सिटपिटाकर अत्यन्त शीघ्रता से उठते और

रहीम के चित्र को उलटा एक चौकी पर रखते हुए) जी हाँ ! माफ कीजिये, आपको फिर तकलीफ हुई ।

रहीम

आप बार-बार बुलवाती हैं, जब आता हूँ, तब इसी तरह माफी माँगती हैं और बुलवाने का मतलब भी कभी नहीं बतलातीं ।

हसीना

क्या कहूँ, खानखाना साहब ! बुलवाये बिना···**(चुप हो जाती है)**

रहीम

हाँ, बुलाये बिना··· । पर चुप क्यों हो गईं ? कहिये, कहिये ।

हसीना

(चारों तरफ से साहस बटोरते हुए) बुलवाये बिना रहा नहीं जाता ।

रहीम

और जब आता हूँ तब कुछ कहा नहीं जाता ।

[औरत कुछ नहीं बोलती सिर झुका लेती है । कुछ देर एक विचित्र प्रकार की निस्तब्धता]

रहीम

कहिये, कहिये, कुछ तो कहिये ।

[फिर भी हसीना कोई उत्तर नहीं देती । फिर कुछ देर निस्तब्धता।]

रहीम

समझ में नहीं आता यह सब क्या माजरा है !

हसीना

(यकायक) खानखाना, मैं तुम्हारे जैसा सुन्दर, सुशील, बहादुर बेटा चाहती हूँ ।

रहीम

(विचारते हुए) शायद यह मेरे अधिकार के बाहर है क्योंकि लड़के का रंग, रूप, शील, स्वभाव कैसा हो, कैसा न हो इसलिए सबसे

अच्छा यही है कि मुझ-सा क्या, मैं ही आज से तुम्हारा लड़का हुआ और तुम मेरी माता ।

रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चून ॥

[रहीम अपना सिर उसके पैरों में रख देता है, उसके नेत्रों से झर-झर आँसू बह निकलते हैं ।]

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान
सोरों

समय
सन्ध्या

[पीछे दूर पर गंगा का बहाव दिखता है । एक तरफ एक छोटी सी सरिता बहकर गंगा में मिलती है, निकट एक ओर गोस्वामी तुलसीदास जी की छोटी-सी कुटिया है । कुटिया के सम्मुख एक कच्चा चौक है जो गोबर से स्वच्छ लीपा गया है । इस चौक के चारों ओर गोबर पर श्वेत छुई की किनार है और बीच में छुई के ही श्वेत कलात्मक फल आदि बनाये गये हैं । चौक के चारों ओर तुलसी के वृक्ष लगे हैं और इधर-उधर आम इत्यादि के तरु भी । सारे दृश्य में सादगी, स्वच्छता और कला का एक अद्भुत मिश्रण दृष्टिगोचर होता है । कुटिया के सामने एक काष्ठ के पटे पर कुशासन बिछा गोस्वामी तुलसीदास जी बैठे हुए हैं । तुलसीदास जी अधेड़ अवस्था के हैं । वर्ण गेहुँआ, शरीर न बहुत ऊँचा न नीचा, न स्थूल न दुर्बल । गोलाकार श्वेत शिखा सिर पर बँधी हुई है । ललाट पर रामानुज सम्प्रदाय का श्वेत और लाल तिलक है । यही तिलक वक्षस्थल पर और भुजाओं पर भी है । बाएँ कन्धे पर मोटा स्वच्छ यज्ञोपवीत है और गले में तुलसी की मोटी माला । वे एक मोटी सफेद धोती पहने हुए हैं, ऊपर का अंग खुला है, दाहिने कन्धे पर एक

छोटा-सा उत्तरीय है। तुलसीदास जी की सारी आकृति और मुद्रा से एक विचित्र प्रकार की शान्ति और तेज दृष्टिगोचर होता है। उनके पटे के दाहिनी ओर एक काष्ठ के सिंहासन पर भगवान राम के पंचायतन का एक बड़ा-सा चित्र है और बायीं ओर एक पीठ पर पोथी है। तुलसीदास जी के सामने एक पटे पर पूजा की सामग्री है। उनके सम्मुख चौक में अनेक ग्रामनिवासी बैठे हुए हैं। इनमें सभी वर्णों के लोग हैं। तुलसीदास जी विनयपत्रिका का एक भजन गा रहे हैं।]

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरन भव भय दारुनं।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुनं।
कन्दर्प अगनित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरं।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरं॥
भजु दीनबन्धु दिनेस दानव दैत्यवंस निकंदनं।
रघुनन्द आनँदकन्द कौसलचन्द दसरथ नन्दनं॥
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषनं।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषनं॥
इमि बदत तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास करु कामादि खल दल गंजनं॥

[भजन पूर्ण होते होते रहीम का कुछ हिन्दू-मुसलमान मुसाहबों और शरीर-रक्षकों के साथ प्रवेश। रहीम झपटकर तुलसीदास जी के चरणों को पकड़ उनके चरणों में अपना सिर रख देता है—और कहता है।]

रहीम

आपका एक तुच्छ किंकर अब्दुर रहीम खाँ चरणों में प्रणाम करता है।

सुरतिय नरतिय नागतिय, अस चाहत सब कोय।
गोद लिये हुलसी फिरे, तुलसी सो सुत होय॥

तुलसीदास

(खड़े हो रहीम को हृदय से लगाते हुए) अच्छा खानखाना साहब ! बड़ी कृपा की आपने, बहुत दिनों से आपके दर्शन की अभिलाषा थी ।

रहीम

आज कृतार्थ हुआ गोस्वामी जी इन दुर्लभतम और पवित्रतम दर्शनों को पाकर ।

[वहाँ के उपस्थित लोगों से कुछ व्यक्ति पटे और आसन लेकर आते हैं । तुलसीदास जी के सामने एक पटा और आसन रखा जाता है, शेष इधर-उधर]

तुलसीदास

बैठिये, खानखाना साहब । (अन्य आगुन्तकों से) बैठो भाई, आप लोग भी सब बैठो ।

[तुलसीदास जी अपने पटे पर, रहीम उनके सामने के पटे पर और शेष सब लोग भी यथास्थान बैठते हैं ।]

तुलसीदास

कहिये, खानखाना साहब, आपके कुटुम्ब में सब लोग कुशलपूर्वक हैं न ! बादशाह अकबर और शाही महल में सब लोग अच्छी तरह हैं न ! आगरे में तो चैन की वंशी बज रही है न !

रहीम

भगवान राम की कृपा और आपके आशीर्वाद से सब ठीक है । जिस राज्य में आप सदृश सन्त का निवास हो और रामकथा का परायण, वहाँ सब कुछ शुभ ही शुभ रहता है ।

[कुछ देर निस्तब्धता]

तुलसीदास

और कहिये, आजकल आपका सारा राज-काज, दान-दक्षिणा तो ठीक चल रही है न !

रहीम

आपकी दया से सब ठीक ही है ।

तुलसीदास

'ठीक ही' शब्द का आपने कैसे उपयोग किया खानखाना साहब !

रहीम

(**दीर्घ निश्वास छोड़कर**) क्या कहूँ गोस्वामी जी !

तुलसीदास

क्यों, आप कुछ उद्विग्न से दिखाई देते हैं, दीर्घ निश्वास भी छोड़ रहे हैं। जब सब कुछ ठीक है तब यह मुद्रा कैसी ? आप सदृश महानुभाव की यदि मैं कुछ भी सेवा कर सकूँ ।

[रहीम चुप रहकर फिर एक दीर्घ निश्वास छोड़ता है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

तुलसीदास

(**अन्य उपस्थित लोगों से**) अच्छा, भाई, आप लोग थोड़ा हट जायँ मैं खानखाना से एकान्त में कुछ वार्तालाप करूँगा ।

[सब लोगों का प्रस्थान । केवल तुलसीदास जी और रहीम रह जाते हैं ।]

कहिये, अब निस्संकोच होकर कहिये खानखाना साहब, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

रहीम

इसीलिए तो सेवा में उपस्थित हुआ हूँ गोस्वामी जी ।

संतत संपतिवान् को सब कोऊ सब देय ।
दीनबंधु बिनु दीन कै को रहीम सुध लेय ॥
रहिमन उतरे पार भार झोंकि कै भार में ।
जिनके सिर पर भार वे बूड़े मझधार में ॥

और गोस्वामी जी—

रहिमन गठरी धूरि कै रही पवन तें पूरि।
गाँठ युक्ति कै खुलि गई अंत धूरि कै धूरि ।।

तुलसीदास

समझा खानखाना साहब, तो आपको विराग हुआ है।

रहीम

हाँ, गोस्वामी जी ! मेरे जीवन रूपी तरु की जड़ सदा विरागमय ही हो रही है। मेरा जीवन रूपी पौधा जैसे जैसे बाहरी प्रतिष्ठा और वैभव में पल्लवित पुष्पित और फलित होता जाता है वैसे वैसे भीतर की यह विराग की जड़ फैलती जाती है। मेरी उद्विग्नता का यही कारण है और इस उद्विग्नता के निवारण के लिए क्या किया जाय यही सलाह लेने में सेवा में उपस्थित हुआ था। आपका यह सादा और पवित्र जीवन मेरे लिए सदा ही आकर्षक रहा है। और आज आपके दर्शन तथा यहाँ का का सारा वायुमण्डल देखने के पश्चात् तो अब मैं आगरा लौटना ही नहीं चाहता।

तुलसीदास

खानखाना साहब, इसके पूर्व आपसे न मिलने पर भी मैं आपके जीवन से भली भाँति परिचित था। आपके वाह्य रागमय जीवन के भीतर जिस विराग का प्रवाह है वह मुझसे छिपा नहीं था। बिना इसके क्या कोई यह सब कर सकता है जो आप कर रहे हैं। पर खानखाना साहब, यह सृष्टि भगवान की लीला के लिए है और यह लीला तब तक नहीं चल सकती जब तक इस सृष्टि में एकता के बाहर विभिन्नता न हो। इसीलिए इस सृष्टि में जहाँ एक ओर मेरे सदृश विरागी की आवश्यकता है वहाँ आप सदृश महानुभावों की भी। और इसीलिये भगवान श्री कृष्ण अपनी भगवद्गीता के उपदेश में कहते हैं—

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः।

हाँ, प्रायः आपके समान सम्पन्न व्यक्ति अपनी सम्पन्नता के मोह-

माया जाल में फँसे रहते हैं, आप उनमें नहीं हैं। आप हैं उनमें जिनके सम्बन्ध में भगवान श्री कृष्ण ने भी गीता में कहा है—

पद्मपत्रमिवाम्भसा।

यदि सभी मेरे सदृश विरागी हो जायँ तो भगवान की यह लीला कैसे चले ? आप जहाँ हैं, वहीं आपका उचित स्थान है। बढ़ने दीजिये जीवन रूपी तरु का वाह्यत्र वैभव रूपी स्वरूप और फैलने दीजिये उसकी आंतरिक विरागमयी जड़ें। कितना उपकार हो रहा है आपके द्वारा गुणियों का, कवियों का, हर प्रकार के आर्त्तों का। मैं अपने धर्म पर आरूढ़ हूँ, आप अपने धर्म पर आरूढ़ रहिये।

[रहीम का सिर झुक जाता है। तुलसीदास जी उसकी ओर देखते रहते हैं। कुछ देर निस्तब्धता।]

तुलसीदास

कहिये, खानखाना साहब ! मेरा कहना कुछ ठीक जान पड़ता है या नहीं ?

रहीम

(सिर उठाते हुए) क्या कहूँ !

तुलसीदास

नहीं, नहीं, जो मैं कहता हूँ वही आपके लिये कल्याणकारी मार्ग है। देखिये, यदि आप फकीर हो जायँगे तो इस भगवत्लीला की कितनी हानि होगी। आपमें राग और विराग का जो अद्भुत सम्मिश्रण है वही तो आपके द्वारा इतने कल्याणकारी कार्य करा रहा है। इसीलिए भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं—

स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।

[रहीम फिर सिर झुकाता है। तुलसीदास जी उसकी आर देखते रहते हैं। फिर कुछ देर निस्तब्धता।]

तुलसीदास

कहिये, ठीक कह रहा हूँ न !

रहीम

(**सिर उठाते हुए**) कुछ समझ में नहीं आ रहा गोस्वामी जी ।

तुलसीदास

फिर देखिये, एक बात और। बादशाह अकबर के सदृश राजा और आपके सदृश महामंत्री के कारण आज का यह मुगल शासन सच्चा भारतीय शासन हो गया है। अपने-अपने धर्म के अनुसरण की सबको पूर्ण स्वतन्त्रता है। हिन्दू और मुसलमान को एक दृष्टि से देखा जाता है। मन्दिर और मस्जिद एक-से माने जाते हैं। हिन्दी-मुस्लिम दोनों संस्कृतियों के एक अपूर्व मिलन और जीवन के क्षेत्र में उत्कर्ष ही उत्कर्ष, उनके विकास के समान अवसर, आध्यात्मिक और आधिभौतिक दोनों ही प्रकार के सुखों से प्रजा अत्यन्त समृद्ध, सुखी और संतुष्ट है।

[फिर कुछ देर निस्तब्धता ।]

रहीम

अच्छा, गोस्वामी जी, एक और अभिलाषा से सेवा में उपस्थित हुआ था ।

तुलसीदास

उसे भी कहिये ।

रहीम

आपके श्रीमुख से आपकी रामायण का कोई प्रकरण सुन कानों को पवित्र करना चाहता हूँ ।

तुलसीदास

आपकी यह इच्छा मैं अवश्य पूरी करूँगा ।

[तुलसीदास जी बायीं ओर रखी पोथी के कुछ पृष्ठ इधर-उधर उलटकर राम और भरत की भेंट का प्रसंग गाना आरम्भ करते हैं ।]

सकल द्विजन्ह मिलि नायेउ माथा, धरम धुरन्धर रघुकुल नाथा ।
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज, नमत जिन्हहिं सुर मुनि संकट अज ॥

परे भूमि नहिं उठत उठाये, बर करि कृपासिंधु उर लाये।
स्यामल गात रोम भये ठाढ़े, नव राजीव नयन जल बाढ़े॥
राजिव लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी।
अति प्रेम हृदय लगाइ अनुजहिं मिले प्रभु त्रिभुवन धनी॥
प्रभु मिलत अनुजहिं सोह मो पहिं जाति नहिं उपमा कही।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुषमा लही॥
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहिं बचन बेगि न आवई।
सुनु सिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई॥
अब कुसल कोसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो।
बूड़त बिरह बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो॥
पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लगाइ।
लछिमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाइ॥

यवनिका

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान

चित्रकूट के निकट रहीम की जागीर के एक कस्बे
में रहीम के मकान का बैठकखाना

समय

सन्ध्या

[बैठकखाने की दीवालों से जान पड़ता है कि साधारण मकान है। दीवालें छुई मिट्टी से पुती हुई स्वच्छ हैं। छत से कुछ काँच की हंडियाँ और गोले लटक रहे हैं। भूमि पर बिछावन है, उस पर बैठने के लिए कुछ लकड़ी के तखत हैं। इन पर गद्दी तकिये लगे हैं। सजावट में बहुमूल्य वस्तु एक ही है, श्री कृष्ण और राधा की मूर्तियों का सिंहासन, जिस पर श्री कृष्ण और राधा की वे ही मूर्तियाँ हैं जो दूसरे अंक के पहले दृश्य में थीं। इस सिंहासन के सामने नमाज़ पढ़ने का कालीन बिछा हुआ है। रमजाना इधर-उधर झाड़ती हुई घूम रही है और धीरे-धीरे गा रही है। वह अब प्रौढ़ता के निकट जान पड़ती है।]

बहति मरुति मन्दम् मैं उठी राति जागी।
शशि-कर कर लागैं सेल ते पैन बागी॥
अहह ! विगत स्वामी क्या कहौं मैं अभागी।
मदन शिरसि भूयः क्या बला आन लागी॥
हर नयन-हुताशं ज्वालया जो जलाया।
रति-नयन-जलौघे खाक बाकी बहाया॥
तदपि दहति चित्तम् मामकं क्या करौंगी।
मदन शिरसि भूयः क्या बला आन लागी॥

हिम-ऋतु रतिधामा सेज लोटौं अकेली।
उठत विरह-ज्वाला क्यों सहौं री सहेली ॥
चकित नयन बाला ! तत्र निद्रा न लागी।
मदन शिरसि भूयः, क्या बला आन लागी ॥
मनसि मम नितान्तम् आई कैं वासु किया।
तन मन सब मेरा मानहु छीन लिया ॥
इति वदति पठानी मन्मथांगी विरागी।
मदन शिरसि भूयः क्या बला आन लागी ॥

[गीत पूर्ण होते होते नेपथ्य में सुनायी देता है।]

नयन सलोने अधर मधु कहो रहीम घटि कौन।
मीठो भावै लोन पर अरु मीठे पर लौन ॥
कहा करौं बैकुण्ठ लै कल्प वृक्ष कै छाँह।
रहिमन ढाक सराहिये जो प्रीतम - गल - बाँह ॥

[नेपथ्य का यह स्वर सुन रमजाना मुस्कराते हुए एक दरवाजे के पीछे छिप जाती है। मुहम्मद अमीन का प्रवेश। वह भी अब प्रौढ़ हो गया है। उसके हाथों में एक मोटी रस्सी है।]

मुहम्मद अमीन

(हाथ उठा रस्सी को अपने सामने कर) पर···पर कहाँ···कहाँ सलोने नयन। और कहाँ···कहाँ मधुर अधर···कहाँ···कहाँ कल्पवृक्ष की छाँह और कहाँ···कहाँ प्रीतम की गलबाँह ! अरी, रस्सी सुन···सुन तू, गलबाँह की जगह गले में होगी अब···अब तू, और सीधा···सीधा जाऊँगा बैकुण्ठ को। (रस्सी में गला फँसा उसके दोनों छोरों को दोनों हाथों से खींचना आरम्भ करता है।)

रमजाना

(मुहम्मद अमीन को इस प्रकार फाँसी लगाते देख झपटकर उसके हाथों को पकड़कर) अरे···अरे यह तुम क्या कर रहे हो ! खुदकशी !

मुहम्मद अमीन

मत···मत रोको मुझे। तू···तू कौन है रोकने वाली। क्या···क्या

मैं मर भी नहीं सकता। (जब रमजाना फिर भी हाथ नहीं छोड़ती तब) या खुदा !

[दोनों इसी तरह खड़े रहते हैं। कुछ देर निस्तब्धता।]

रमजाना

अच्छा, तुम नहीं मानोगे ?

मुहम्मद अमीन

हरगिज···हरगिज नहीं।

[दोनों एक दूसरे को देखते रहते हैं, फिर कुछ देर निस्तब्धता।]

मुहम्मद अमीन

एक ही शर्त पर मैं मरना मुलतवी कर सकता हूँ।

रमजाना

(मुस्कराकर) सिर्फ मुलतवी ?

मुहम्मद अमीन

मरना तो मुलतवी ही किया जा सकता है, हमेशा को तो बन्द नहीं किया जा सकता !

रमजाना

किस पर—-

मुहम्मद अमीन

तो कह दूँ।

जेहि रहीम तन मन लियो कियो हिये बिच भौन।
तासों सुख दुख कहन की रही बात अब कौन॥

इसलिए कह ही देता हूँ। इस शर्त पर मैं मरना मुतलवी कर सकता हूँ कि तू मुझसे शादी करना मँजूर कर ले।

रमजाना

पर तुमने तो उस दिन फहीम से कहा था न !

रहिमन ब्याह बियाधि है सकहु तो जाहु बचाय।
पायन बेरी परत है ढोल बजाय बजाय ॥

मुहम्मद अमीन

मैंने अपनी इस राय को एकदम पलट दिया है क्योंकि अब मैं तुझे नायिकाभेद की स्वकीया बनाना चाहता हूँ जिसका हमारे मालिक ने वर्णन किया है।

रहति नयन के कुरवा चितवन छाय।
चलत न पगु पैजनिया मगु ठहराय॥

और स्वीकया में भी मैं तुझे उस तरह की प्रोषितपतिका नहीं रखना चाहता, जिसके मुताल्लिक मालिक कहते हैं—

कासों कहऊँ संदेसवा पिय परदेश।
लगेउ चैत नहिं फूले तेहि वन टेस॥

इसलिए अब मैं होना चाहता हूँ।

पति उपपति बेसिकवा त्रिविध बखान।
विधि सों व्याहो गुरुजन पति सो जान॥

और तू अब साक्षात् पति के रूप में मेरे दर्शन कर—

बिरहिन अउर बिदेसिया भे इक ठौर।
पिय मुख हेरि तिरियवो चन्द चकौर॥

[रमजाना मुख नीचा कर मुस्कराने लगती है।]

मुहम्मद अमीन

तो हुआ तय न !

[रमजाना कुछ न कह उसी प्रकार मुस्कराते हुए कनखियों से मुहम्मद अमीन की ओर देखती है।]

मुहम्मद अमीन

(रमजाना की ओर देखते हुए) हुआ तय, तय हुआ। हुआ तय, तय हुआ। रमजाना दीवाना। दीवाना रमजाना हा-हा-हा···

[मुहम्मद अमीन हाथ की रस्सी एक ओर जोर से फेंकता है । उसी ओर से फहीम आ रहा है । यह रस्सी फहीम के सिर पर जोर से लगती है । फहीम सिर पकड़कर बैठते हुए चिल्लाता है "ओह" । फहीम के देखने से भी उसकी अवस्था बढ़ गई है इसका पता लग जाता है ।]

मुहम्मद अमीन

(फहीम की आवाज सुन उसी ओर बढ़) क्या···क्या हुआ फहीम ?

फहीम

मार डाला मुझे और पूछता है, क्या हुआ ! **(खड़े हो उसी ओर बढ़ता है ।)**

मुहम्मद अमीन

मार डाला, मरे कहाँ हो ! खड़े हो चल रहे हो, बोल रहे हो । देखो रमजाना की और मेरी शादी तय हो गयी । हा-हा-हा···

फहीम

शादी ? तुम तो शादी के खिलाफ थे न ?

मुहम्मद अमीन

हा-हा-हा···मैंने उस संगीन मामले में अपनी राय एकदम बदल डाली है । और मेरी इस पुरानी माशूका ने ढलती उम्र में क्यों न हो शादी मंजूर कर ही ली । हा-हा-हा···

फहीम

(रमजाना से) क्यों रमजाना !

[रमजाना कोई उत्तर नहीं देती ।]

फहीम

अच्छा, तो आज शाम की नमाज़ में तुम्हारे सफल निकाह के लिए पढ़ू गा ।

मुहम्मद अमीन

बस नमाज़ ही ! हमारी शादी के लिए कोई तोहफा, दावत नहीं दोगे ?

फहीम

अब कहाँ है तोहफा और दावत के लिए पैसा ?

मुहम्मद अमीन

हाँ, सब तो उड़ा डाला, इसीलिए तो कहावत मशहूर हो गयी है। कमावे रहीम, उड़ावै फहीम। हा-हा-हा···

[नेपथ्य से गान की ध्वनि सुनाई पड़ती है।]

मुहम्मद अमीन

(**ध्यान से नेपथ्य के गान को सुनते हुए**) बेगम साहिबा के तशरीफ का टोकरा आ रहा है। हा-हा-हा···अब यहाँ पढ़ेंगी नमाज़ और करेंगी कृष्ण-पूजा। नमाज़ और बुतपरस्ती साथ-साथ। हा-हा-हा··· ।

फहीम

अच्छा, चलो तुम दोनों भी आज की नमाज़ में मेरा साथ दो।

[तीनों का प्रस्थान। माहेबानू का थाल में पूजा की सामग्री लिये हुए प्रवेश। वह अब प्रौढ़ा है। वह थाल को एक तख्त पर रखकर पहले नमाज़ पढ़ती है फिर कृष्ण की पूजा कर आरती करते हुए गाती है।]

छबि आवन मोहनलाल की।
काछनि काछे कलित मुरलि कर पीत पिछौरी साल की॥
बंक तिलक केसर को कीने दुति मानो बिधु बाल की।
बिसरत नाहिं सखि मो मन ते चितवनि नयन बिसाल की॥
नीकी हँसनि अधर सधरनि की छबि छीनी सुमन गुलाल की।
जल सों डारि दियो पुरइन पर डोलनि मुकतामाल की॥
आप मोल बिन मोलनि डोलनि बोलनि मदन गोपाल की।
यह सरूप निरखै सोइ जानै इस रहीम के हाल की॥

[रहीम का प्रवेश । उसकी अवस्था भी अब प्रौढ़ है । कानों के निकट श्वेत बाल हो गये हैं ।]

रहीम

रहिमन मोहि न सुहाइ अमी पियावत मान बिनु ।
जो विष देइ बुलाइ मान सहित मरिबो भलो ॥

इसीलिए, प्रिये, मैं आगरे में न ठहर सका और बहुत समझ-बूझ कर मैंने लिखा—

रहिमन रहिबौ वाँ भलो जौ लौं सील समूच ।
सील ढील जब देखिये तुरत कीजिये कूच ॥

और भी—

रहिमन तब लग ठहरिये दान मान सनमान ।
घटत मान देखिय जबहिं तुरतहिं करिय पयान ॥

माहेबानू

और कितनी बार कह चुके तुम यह मुझे तथा कितनी बार सुना चुके यह सोरठा और दोहा मुझको !

रहीम

(एक चौकी पर बैठते हुए) माहेबानू, अब यह कहने और इस सोरठे और दोहे को सुनाने के सिवा मेरे पास कहने और सुनने को रहा ही क्या है ! (दोनों हाथ मलने लगता है) और सुनो, आज ही फिर कुछ लिखा है ।

माहेबानू

क्या ?

रहीम

(कुर्त्ते के खीसे से एक कागज़ निकाल पढ़ते हुए ।)

निज कर क्रिया रहीम कह सुधि भावी कै हाथ ।
पाँसे अपने हाथ में दाँव न अपने हाथ ॥

ज्यों नाचति कठपुतरी, करम नचावत गात।
अपने हाथ रहीम ज्यों नाहिं आपने हाथ॥

माहेबानू

(**रहीम के निकट की दूसरी चौकी पर बैठते हुए**) और भावी का यह वर्णन करने के बाद भी तुम्हारे मन में शान्ति नहीं है।

रहीम

पर, अगर मैं इस प्रकार के वर्णन न करूँ तो पागल हो जाऊँ! इस मुसीबत में यह साहित्य-सृजन ही तो सिर्फ़ सहारा रह गया है।

माहेबानू

एक बात कहूँ!

रहीम

तुम्हें भी कहने में संकोच होता है?

माहेबानू

नहीं, संकोच नहीं, पर···(**चुप हो जाती है**)

रहीम

पर···पर रुक क्यों गयी?

माहेबानू

तुम्हारे मन की इस वक्त जो हालत है, उसमें मैं जो कुछ कहती हूँ एक बात सोचकर कहना चाहती हूँ।

रहीम

कौन-सी?

माहेबानू

यह कि मेरे किसी कथन से तुम्हारा मन और खिन्न न हो जाय!

रहीम

(**माहेबानू के दोनों हाथ अपने हाथ में लेकर**) नहीं, बानू नहीं, तुम्हारे किसी भी कथन से मेरा मन खिन्न नहीं हो सकता। क्योंकि अब

मैंने अच्छा और बुरा दोनों तरह का वक्त देख लिया। जब मेरे हाथ में अधिकार थे, ताकत थी, शक्ति थी, तब मुझसे डाह रखते हुए भी मेरे मुँह पर ठकुरसुहाती करने वालों को भी देख लिया और अब मेरे पतन के वक्त वे ही खुशामदी कैसे खुश हैं, यह भी अच्छी तरह समझ लिया। दोस्त दुश्मन सबको पहचान लिया और जान लिया—

कह रहीम संपति सगे बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे सोई साँचे मीत॥
सब कहँ सब कोऊ करे कै सलाम कै राम।
हित रहीम जब जानिए जब कुछ अटके काम॥

और जब अबुलफज़ल के समान दोस्त भी ऐसे वक्त दुश्मन हो जाते हैं तब मैंने यह भी समझ लिया कि सच्चे मीत कुटुम्ब के ही लोग होते हैं, उनमें भी पत्नी, अगर पत्नी सच्ची पत्नी हो। तुम···तुम कैसी हो, यह मुझे इस विपत्ति के समय ही मालूम पड़ा है। तुम्हारे···तुम्हारे हर कथन से मेरी खिन्नता दूर ही होती है, तुम्हारा···तुम्हारा कोई भी कथन मेरे मन को खिन्न नहीं कर सकता। कहो···कहो जो तुम कह रही थीं, नहीं तो मुझे बड़ा अफसोस होगा।

माहेबानू

मैं यह कह रही थी कि जब तुम्हारा वक्त अच्छा था, इतना धन था, जिसकी गिनती न हो सकती थी, इतनी इज्जत, इतनी शौहरत जितनी इस मुगल-राज्य में शायद ही किसी की थी, तुम्हारी किस्मत का सूरज सातवें आसमान पर था, उस वक्त था तुम्हारे मन में विराग, इस धन से नफरत, उस इज्जत और शौहरत से ग्लानि, उस समय तुम गोस्वामी तुलसीदास जी का अनुसरण करना चाहते थे और अब बेचैन हो उसी धन, उसी पद के लिए।

रहीम

तुम ठीक, बिल्कुल ठीक कह रही हो। इस समय मैं इसे छोड़ना चाहता था और छोड़ देता तो सच मानो मुझे जरा भी अफसोस न

होता। बल्कि इतनी खुशी होती जिसकी हद नहीं, पर आज तो उस धन और उस पद ने मुझे छोड़ा है। इसीलिए मेरे मन की यह दशा है। जो कुछ गया है, उसे किसी तरह एक बार फिर प्राप्त कर सकता।

माहेबानू

और किसी तरह ही यदि वह फिर प्राप्त हो गया तो इस बार तो······

रहीम

(**बीच ही में**) उसे ऐसी लात जमाऊँगा कि फिर उसकी छाया भी मुझे न छू सकेगी, क्योंकि अब मुझे विश्वास हो गया है—

आप अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपन नाहिं।
रहिमन गलि है साँकरी दोनों नहीं ठहरायँ॥

पर···पर बेगम, एक बार इस जीवन का रुख तो पलटे।

[**माहेबानू कोई उत्तर न दे रहीम की ओर देखती है। कुछ न देर निस्तब्धता।**]

रहीम

इस समय तो प्रिये, गुजरात की फतह याद आती है। उस फतह पर बनवाया हुआ फतहबाग याद आता है। उसके बाद फतेहपुर सीकरी का वह नजारा याद आता है जिसमें बादशाह ने खुद मेरा स्वागत कर मुझे खानखाना की पदवी दे नवरत्नों की सभा का एक रत्न घोषित किया था। फिर याद आती है मेरी आगरे की शानदार हवेली, उसका आरायशी और राजसी सामान तथा वहाँ जब बादशाह सलामत ने तशरीफ लाकर मुझे सल्तनत का महामंत्री बनाया था वह दृश्य। और···और बेगम, दक्षिण में भी जो कुछ हुआ, इसमें मेरा कोई कसूर नहीं।

माहेबानू

हाँ, तुम्हारा क्या कसूर था। बादशाह ने शाहजादे सुलतान मुराद को दक्षिण भेजा और उसकी मदद के लिए तुम्हें। मुगलों के लश्कर में आपस में ही फूट हो गयी।

रहीम

और इतने पर भी जब जीत दुविधा में थी मैंने साहस कर लड़ना तय किया। जब कुछ सेनानायकों ने पूछा कि यदि हार हो जावे तो मैं वह जगह बता दूँ, जहाँ जाकर वे मुझे ढूँढ सकें, तो मैंने उन्हें जो जवाब दिया वह मुझे जीवन भर याद रहेगा। मैंने उस वक्त कहा था कि अगर हार हो जावे और मुझे ढूँढने की जरूरत पड़े तो मुझे ढूँढना लोथों के बीच। दुविधा में होने पर भी मेरी जीत हुई।

माहेबानू

और उस जीत की खुशी में तुम्हारे पास उस समय जो पच्हत्तर लाख रुपया और माल था वह सब लुटा दिया।

रहीम

इतने पर भी उस शराबी शाहजादे सुलतान मुराद ने बादशाह सलामत से मेरी शिकायत की। मैं अपनी बेगुनाही तरह तरह से बादशाह सलामत को अर्ज करता रहा, पर पानी से खून गाढ़ा होता है।

माहेबानू

कहाँ बादशाह सलामत और कहाँ उनके ये शाहजादे! जैसा नालायक मुराद वैसा ही दानियाल। जानते हो, मुझे जीवन में सबसे अधिक दुःख किस बात का है?

रहीम

किस बात का?

माहेबानू

इस बात का कि मैंने शराबी शाहजादे सुलतान दानियाल से अपनी बेटी जाना बेगम का विवाह किया।

रहीम

कोई कुसूर न रहने पर भी आगरे की उस हवेली को छोड़कर पड़ा हुआ हूँ चित्रकूट के नज़दीक, अपनी जागीर की इस झोंपड़ी में।

(श्री कृष्ण-राधा की मूर्ति को देखते हुए)

रहिमन बहु भेषज करत व्याधि न छोड़त साथ।
खग मृग बसत अरोग बन हरि अनाथ के नाथ॥
समय दशा कुल देख कै लोग करत सन्मान।
रहिमन दीन अनाथ हैं तुम बिन को भगवान॥

[फहीम का हाथ में कागजों का एक बण्डल-सा लेकर प्रवेश ।]

रहीम

(फहीम को देखकर) अच्छा, आज की खबरें ले आया ?

फहीम

(आदाब बजाकर कागज रहीम को देते हुए) जी हुज़ूर ।

[रहीम उत्सुकता से फहीम के हाथ के कागजों को ले लेता है । फहीम का आदाब बजाकर प्रस्थान । रहीम जल्दी उन कागजों को उलटता-पुलटता है । माहेबानू उसकी ओर देखती रहती है, कुछ देर निस्तब्धता ।]

माहेबानू

आजकल कितने आदमी मुकर्रर हैं राजकाज की गुप्त खबरों को प्राप्त करने के लिए ?

रहीम

(कागज देखते-देखते) कुछ तो हैं ही । जब तक राज्यतृष्णा से पिण्ड नहीं छूटा है तब तक उन गुप्तचरों और गुप्त खबरों से कैसे पिण्ड छूट सकता है ?

[फहीम का पुनः प्रवेश]

रहीम

(फहीम के आने की आहट पा उसकी ओर देख) क्यों, और कोई खबर है ?

फहीम

हुजूर एक कवि मिलने को आए हैं।

रहीम

(**दीर्घ निःश्वास छोड़कर**) कोई याचना करने आए होंगे, क्या कहूँ !

तबहीं लगि जीवो भलो दीबो परै न धीम।
बिन दीबो जीवो जगत हमहिं न रुचै रहीम॥

(**कुछ देर रुककर**) अच्छा, देख फहीम, मेरे पास तो इस वक्त कुछ देने को है नहीं, पर कवि को तो दिलाऊँगा ही। बान्धवनरेश के नाम मेरी ओर से एक चिट्ठी लिखकर ला, और उसे मेरे दस्तखत से उन कविराज को दे दे। उसमें मेरा अभी बनाया हुआ वह दोहा लिख देना। याद है न !

फहीम

वही न हुजूर !

चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेस।
जा पर विपदा परति है सो आवत यहि देस॥

रहीम

हाँ, वही दोहा। मुझे यकीन है कि मेरा खत पाकर रीवाँ-महाराज इस कवि का उचित सत्कार कर देंगे।

[**फहीम का प्रस्थान। मुहम्मद अमीन का शीघ्रता से एक शाही फरमान लेकर प्रवेश।**]

मुहम्मद अमीन

दीवान शाही फरमान लेकर हाजिर हुआ है, हुजूर !

रहीम

(**उत्सुकता से खड़े हो**) अच्छा, लाहौर से शाही हलकारा आया है ?

मुहम्मद अमीन

जी हाँ, लाहौर से शाही हलकारा···शाही फरमान और उसे लेकर हाजिर हुआ है, दीवाना !

रहीम

(मुहम्मद अमीन से शाही फरमाना लेकर उसे खोल जल्दी से पढ़ते हुए प्रसन्नता से चिल्लाकर) लो···लो, बेगम, बादशाह सलामत की खफगी दूर हुई। मुझे फिर दक्षिण जाने का हुक्म हुआ है। सचमुच यह विपत्ति अच्छी ही आयी।

रहिमन विपदा हू भली जो थोरे दिन होई।
हित अनहित या जगत में जान परत सब कोई॥

गाओ बानू, गाओ, इस शुभ समय में कोई सुन्दर गीत गाओ।

[माहेबानू गाती है।]

करम गति टारे नाहिं टरी।
मुनि वसिष्ठ से पंडित ज्ञानी सोधि के लगन धरी।
सीता हरन मरन दसरथ को बन में विपति परी॥
कहँ वह फन्द कहाँ वह पारधि कहँ वह मिरग चरी।
सीता को हरि लैगो रावन सुबरन लंङ्क जरी॥
नीच हाथ हरिचन्द्र बिकानो बलि पाताल धरी।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग गिरगिट जोनि परी॥
पांडव जिनके आपु सारथी तिन पर विपति परी॥
दुरजोधन को गरब घटायो जदुकुल नास करी।
राहु केतु और भानु चन्द्रमा विधि संयोग परी॥
कहत कबीर सुनो भई साधो होनी होके रही॥

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान

दक्षिण में मुगलों के शिविर में रहीम का खेमा

समय

रात्रि

[खेमे की बेशकीमती कपड़ों की कनातें दिखाई देती हैं। आरामशी सामान से खेमा सजा हुआ है। चाँदी के सिंहासन पर कृष्ण और राधा की मूर्तियाँ पूर्ववत् रखी हैं। सिंहासन के सामने नामाज पढ़ने का कालीन है। मुहम्मद अमीन और रमजाना खड़े हुए बातें कर रहे हैं।]

रमजाना

छुट्टी से लौटने में देर होने की वजह से तुम्हारी दिल्ली में जो घबराहट थी वह तो अब बिल्कुल निकल गई न ?

मुहम्मद अमीन

बिल्कुल ! हा-हा-हा···बिल्कुल दीवाना रमजाना। रमजाना दीवाना बिल्कुल।

रमजाना

क्या हुआ यह भी तो बताओगे या यों ही हा-हा-हा किया करोगे।

मुहम्मद अमीन

हुआ यह मेरी प्यारी बेगम कि तुमने इनके प्यारे बरवै छन्द में जो यह दो पंक्तियाँ लिखीं दरअसल इन्होंने हमें बचाया।

प्रीति रीति को बिरवा चलेहु लगाय।
सींचन की सुधि लीजो मुरझि न जाय॥

मैं तो दिलरूबा इतना घबड़ा गया था कि उनसे एक लफ्ज भी न कह सका। तुम्हारा लिखा हुआ यह बरवै छन्द काँपते हुए हाथों से उन्हें देकर, हिन्दू जिस तरह मंदिरों में साष्टांग दण्डवत् करते हैं, इसी तरह मैं उनके कदमों पर गिर पड़ा। हा-हा-हा···

रमजाना

श्रौर उन्होंने क्या किया ?

मुहम्मद श्रमीन

थोड़ी देर तक तुम्हारा यह बरवै छन्द गुनगुनाते रहे फिर तीन-चार दफा उसे जोर-जोर से पढ़ा आखिर हा-हा-हा इस तरह कहकहा लगाते हुए दीवाना दीवाना कह मुझे उठाकर गले लगा हमारी इस शादी पर मुबारिकबाद दिया। हा-हा-हा।

रमजाना

मैं जानती थी कि यह छन्द उन्हें बहुत पसन्द आयगा और छुट्टी से इतनी देर से लौटने पर भी वे हम लोगों को फौरन माफ कर देंगे। तो इतने ग़मगीन रहने पर भी यह छन्द सुन उन्होंने कहकहा लगाया ?

मुहम्मद श्रमीन

लेकिन बेगम, वह कहकहा लगा, मुझे मुबारकबाद दे वे फिर फौरन ही ग़मगीन हो गये।

रमजाना

हाँ, बेगम माहेबानू की मौत उनके लिए जिन्दगी का सबसे बड़ा सदमा है। श्रौर श्रब उनका दामाद शाहजादा सुलतान दानियाल श्रौर दारू।

मुहम्मद श्रमीन

दारू दानियाल, दानियाल दारू ! हा-हा-हा...

रमजाना

श्ररे, तुम किसी मामले में गम्भीर भी तो रहा करो। हर बात में हा-हा-हा...

मुहम्मद श्रमीन

दारू पर भी हा-हा-हा नहीं तो फिर दुनियाँ में किस बात पर हँसा जा सकता है ?

रमजाना

पर दारू पी-पीकर यह दानियाल मौत के शिकंजे में फँसता चला जा रहा है। मुझे आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि शाहजादे को दारू न मिले इसीलिए बादशाह सलामत के हुक्म से शाहजादे पर पहरे बिठा दिए गए, लोगों का आना जाना बन्द कर दिया, फिर भी यह दारू उनके पास पहुँच ही जाती है।

मुहम्मद अमीन

मैंने कहा न, दारू दानियाल, दानियाल दारू। हा-हा-हा। अब दारू दानियाल के पास एक नये रास्ते से पहुँचती है। मैं जानता हूँ वह रास्ता। हा-हा-हा !

रमजाना

किस रास्ते पहुँचती है ?

मुहम्मद अमीन

क्यों बताऊँ तुम्हें ? औरतों के पेट में बात नहीं पचती। हा-हा हा !

रमजाना

पर शाहज़ादे की जैसी तन्दुरुस्ती है उसे देखते हुए जिस रास्ते भी दारू पहुँचती है उसे बन्द करना होगा।

मुहम्मद अमीन

दानियाल के पास दारू का पहुँचना बंद करना ! यह कभी हो सकता है ? दानियाल के लिए दारू है शुक्ल अभिसारिका के समान। दारू दानियाल के पास उसी तरह जाती है जिस तरह शुक्ल अभिसारिका का—

सेत कुसुम के हरवा भूषन सेत।
चली रैन उजिअरिया पिय के हेत ॥

रमजाना

पर, यह दारू आखिर किस रास्ते शाहजादे के पास पहुँचता है।

मुहम्मद अमीन

मैंने कहा न, मैं जानता हूँ, परन्तु बताऊँगा हरगिज़ नहीं। हा-हा-हा।

रमजाना

बलि-बलि जाऊँ तुम्हारी, तुम्हें बताना ही होगा, यह शाहज़ादे की जिन्दगी मौत का सवाल है।

मुहम्मद अमीन

एक हीं शर्त पर बता सकता हूँ।

रमजाना

किस शर्त पर ?

मुहम्मद अमीन

बहुत दिनों से तुमने मुहब्बत से लबालब कोई अच्छा गाना नहीं सुनाया। एक अच्छा गाना सुना दो तो बता दूँगा।

रमजाना

यह कोई गाने का समय है ?

मुहम्मद अमीन

गाने, रोने और हँसने को भी कोई समय चाहिये ? हा-हा-हा।

रमजाना

पर, मैं तो इस वक्त न गाऊँगी।

मुहम्मद अमीन

तो फिर दानियाल के पास दारू पहुँचने का रास्ता मैं भी न बताऊँगा। (बैठ जाता है)

[कुछ देर निस्तब्धता]

रमजाना

अच्छा भई, गाये देती हूँ।

[रमजाना गाती है और मुहम्मद अमीन खड़े होकर ताली बजाता है।]

कमल मुकुल मध्ये राति को ऐ सयानी।
लखि मधुकर बंधम् तू भई री दीवानी॥
तदुपरि मधुकाले कोकिला देखि भागी।
मदन शिरसि भूयः क्या बला आन लागी॥
तव बदन मयंकि ब्रह्म की चोप बाढ़ि।
मुख कँवलखि भू पै चाँद ते कांति गाढ़ी॥
मदन मथित रंभा देखते तोहि भागी।
मदन शिरसि भूयः क्या बला आन लागी॥
नभसि घन घनान्ते घनाले घनी कैसि छाया।
पथिक-जन-बधूनां जन्म केता गँवाया॥
अति चतुर मृगाक्षी देखते मौन भागी।
मदन शिरसि भूयः क्या बला आन लागी॥
विगतघन निशीथे चाँद की रोशनाई।
सुत पति गत निद्रा स्वामियाँ छोड़ भागी।
मदन शिरसि भूयः क्या बला आन लागी॥

रमजाना

(गान पूर्ण होने पर) अच्छा, अब बताओ।

मुहम्मद अमीन

शाहजादे सुलतान दानियाल के पास उसके खिदमतदार दुनाली बन्दूकों की नालियों में दारू भरकर लाते और उसे पिलाते हैं। हा-हा-हा।

[कुछ बाँदियों के साथ शीघ्रता से जाना बेगम का प्रवेश। जाना बेगम गौर वर्ण की सुन्दर युवती है। सुनहरी काम वाली रेशमी साड़ी और सलूका पहने है। अंगों पर रत्न-जटित आभूषण हैं।]

जाना बेगम

क्या···क्या कह रहा था दीवाना ! शाहजादे के पास उसके खिदमत-

गार दुनाली बन्दूकों की नालियों में दारू भरकर लाते और उन्हें पिलाते हैं ?

[**मुहम्मद अमीन जाना बेगम का यकायक आगमन देख और उसकी बात सुन स्तब्ध-सा रह जाता है। रमजाना भी चुपचाप जाना बेगम की ओर देखती है। कुछ देर निस्तब्धता।**]

जाना बेगम

हाँ, बोल, बाल न; क्या कह रहा था, चुप क्यों हो गया ?

मुहम्मद अमीन

(**धीरे-धीरे अपने दाहिने हाथ की तर्जनी से छाती ठोकते हुए**) मैं···मैं कुछ कह रहा था ! हा-हा-हा ।

जाना बेगम

अरे मुझसे न बन, मैं जानती हूँ तू दीवाना नहीं सयाना है। (**रमजाना से**) क्यों रमजाना, तुम्हारे ये पतिदेव कह नहीं रहे थे कि शाहजादे के पास उसके खिदमतदार दुनाली बन्दूकों की नालियों में दारू भरकर लाते और इन्हें पिलाते हैं ?

रमजाना

जी हाँ, ये कह तो यही रहे थे ।

मुहम्मद अमीन

बेगम साहिबा, मैं मजाक कर रहा था, मजाक । हा-हा-हा । कहीं दुनाली बन्दूकों की नालियों में भी दारू लायी जा सकती है ? हा-हा-हा ।

जाना बेगम

(**एक चौकी पर बैठते हुए**) क्यों नहीं लायी जा सकती ! अवश्य लायी जा सकती है, और अवश्य लायी जाती होगी। तभी तो इतने पहरे बिठा देने पर भी लोगों का आना-जाना बन्द कर देने पर भी उन्हें दारू मिल जाती है। और कोई मार्ग दारू आने का न बचा तो यह नया अजीबो-गरीब रास्ता ईजाद किया गया । बन्दूकों की नालियाँ ! ओह !

(अपना सिर अपने हाथों पर रख लेती है । कुछ रुककर दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए) यह अति है, अति ।

रहिमन अति मत कीजिये गहि रहिए निज कानि।
अतिशय फूले सहजनो डार पात कै हानि ॥

[फिर कुछ देर निस्तब्धता]

जाना बेगम

(एकदम उठकर शीघ्रता से मुहम्मद अमीन के सामने जाकर उसे चिल्लाकर डाँटते हुए) और क्यों बे, दीवाने, तू···तू···तू भी उन खिदमतगारों में है, है न जो दुनाली वंदूक की नालियों में दारू भर-कर लाते और उन्हें पिलाते हैं ?

मुहम्मद अमीन

(कूदते हुए चिल्लाकर) मैं···मैं बेगम साहिबा ? मैं कभी ऐसा कर सकता हूँ ? यह खुराफात तो वह करते होंगे जिनके बहुत बड़े पेट होते हैं । खानखाना ने बड़े पेट के निस्वत कहा है—

बड़े पेट के भरन में है रहीम दुख बाढ़ि।
यातें हाथी हहरि कै दिए दाँत दोइ काढ़ि ॥

(अपने पेट पर हाथ फेरते हुए) मेरा तो बहुत छोटा पेट है बेगम साहिबा ! और इतने पर भी मैं सदा इस पेट से कहा करता हूँ—

रहिमन पेटे सों कहत क्यों न भये तुम पीठि।
भूखे मान बिगारहु भरे बिगारहु डीठि ॥

रमजाना

बेगम साहिबा ! ये तो आपके घर के बहुत पुराने वफादार मुलाजिम हैं, यह तो ऐसा नहीं कर सकते ।

[मुहम्मद अमीन चिल्ला-चिल्ला कर रोना आरम्भ कर देता है।]

जाना बेगम

(रमजाना से) यह ऐसा करता होगा इस पर तो मुझे भी सन्देह है ।

मुहम्मद अमीन

(चिल्लाकर रोना एकदम बन्द कर और सिसकते हुए) मैं···मैं··· आपके घर···का···बड़ा पुराना···वफादार···खैरख्वाह···खादीम हूँ। कभी···कभी···मुझसे···मुझसे ऐसी···ऐसी···खता···हो सकती है··· बेगम साहिबा !

जाना बेगम

(पुनः चौकी पर बैठते हुए) अच्छा चुप रह, तू शाहजादे साहब के पास इस तरह दुनाली बन्दूकों की नालियों में दारू भरकर नहीं ले जाता, यह मान लिया।

मुहम्मद अमीन

शुक्र बेगम साहिबा, शुक्र खुदा, हा-हा-हा।

जाना बेगम

अब यह बता और देख, सच-सच बताना। दुनाली बन्दूकों की नालियों में कौन खिदमतगार शाहजादे के लिए दारू ले जाता और उन्हें पिलाता है ?

मुहम्मद अमीन

कसम खुदा की, मैं नाम नहीं जानता।

जाना बेगम

यह जानते हुए भी कि दुनाली बन्दूकों की नालियों में शाहजादे के लिए कुछ खिदमतगार दारू लाते हैं तू इन खिदमतगारों का नाम नहीं जानता ?

[नशे में चूर लड़खड़ाते हुए दानियाल का प्रवेश। वह तरुण होने पर भी इतना दुबला हो गया और काला पड़ गया है कि उसकी सारी तरुणाई गायब हो गई है। उसकी आँखें भीतर धँस गयी हैं और पैरों के डग इधर-उधर पड़ रहे हैं। दानियाल को देख जाना बेगम खड़ी हो जाती है और बाकी सब लोग जल्दी से चले जाते हैं।]

दानियाल

हाँ, हाँ मेरे वफादर और खैरख्वाह-खिदमतगार दुनाली बन्दूकों की नालियों में मेरे लिए दारू लाते हैं। और सुनो तुम, सुने खानखाना और सुने खुद बादशाह सलामत ! तुम लोग चाहे कितनी कोशिश क्यों न करो दारू कहीं-न-कहीं से मेरे पास आयगी, फिर आयगी, फिरफिर कर आयगी। तुमने दूसरे रास्ते बन्द किये मुझ पर पहरे बिठाये, मेरे पास लोगों का आना-जाना बन्द किया तो अब वह आती है खिदमतगारों की बन्दूकों की नालियों में। अब खिदमतगार और उनकी बन्दूकों को भी बन्द कर दोगे तो खुदा मेरे लिए दारू आसमान से बरसायेगा। उसकी नदियाँ बहेंगी, उसका समुन्दर भरेगा। डूब जाऊँगा मैं उनमें और डूब जाओगे तुम सब भी।

[दानियाल लड़खड़ाकर एक चौकी पर गिर-सा पड़ता है। जाना बेगम झपटकर उसे सँभालती और उसके पैरों को सहलाती है। कुछ देर निस्तब्धता।]

जाना बेगम

कैसी···कैसी हालत हो गयी है तुम्हारी, और इतने···इतने पर भी यह दारू नहीं छूटती ?

दानियाल

(**चिल्लाकर**) वह नहीं छूट सकती, नहीं छूटेगी, कभी नहीं, हरगिज़ नहीं।

जाना बेगम

परन्तु, नाथ, यह···यह तो खुदकुशी करना है।

दानियाल

खुदकुशी ! खुदकुशी नहीं, यही सच्ची जिन्दगी है।

जाना बेगम

अपना नहीं तो कम से कम उनका तो ख्याल रखो जिनका जीवन

तुम पर अवलम्बित है।···तुम···तुम जानते हो मैं···मैं तुम्हारे बिना एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकती।

दानियाल

(**धीरे धीरे अपने दोनों हाथ जाना बेगम के सिर पर फेरते हुए**) तुम्हें···तुम्हें बुरा संग मिला, दिलरुबा ! पर···पर मैं क्या करूँ। मैं··· मैं चाहता भी हूँ, छोड़ दूँ इस दारू को पर यह मुझे नहीं छोड़ती। और इसकी वजह से हम दोनों में इतनी मुहब्बत होते हुए भी हमारा संग हो गया है तुम्हारे वालिद के इस कथन के अनुसार—

कहु रहीम कैसे निभै केर बेर का संग।
वे डोलत रस आपने उनके फाटत अंग॥

पर···पर तुम तो दिलाराम हो कुछ और ही, ऐसी जिनके लिए तुम्हारे वालिद ही कहते हैं—

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापे नहीं लिपटे रहत भुजंग॥

इसलिए···इसलिए मेरे···मेरे समान बुरे···बुरे शौहर को भी तुम बर्दाश्त···बर्दाश्त—

[**मूर्छित होकर गिर पड़ता है। जाना बेगम के मुँह से चीख निकलती है। रहीम का प्रवेश।**]

रहीम

(**झपटकर**) क्या···क्या हुआ बेटी !

[**उसी समय छटपटाकर दानियाल की मृत्यु।**]

जाना बेगम

(**जोर से**) या···या खुदा !

[**जाना बेगम दानियाल की लाश से लिपट जाती है और चिल्लाकर रोने लगती है। रहीम नजदीक आ ध्यान से, दानियाल के शव को देखते हुए दीर्घ निःश्वास छोड़ता है। मुहम्मद अमीन, रमजाना, फहीम तथा कई नौकरों और बाँदियों का शीघ्रता से प्रवेश।**]

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान

दक्षिण में रहीम के शिविर का खेमा

समय

सन्ध्या

[वही खेमा है जो इसके पहले के दृश्य में था। खेमे की सजावट वैसी ही है। मुहम्मद अमीन एक सफेद कफन का कपड़ा गले तक ओढ़े हुए जमीन पर लेटा हुआ है। उसकी आँखें ऊपर को चढ़ी हुई हैं। उसी के पास रमजाना बैठी हुई उसे धीरे-धीरे पंखा झल रही है।]

मुहम्मद अमीन

(धीरे धीरे) बन्द···बन्द कर दो अब यह पंखा झलना। इस पंखे की हवा से मेरे भीतर से मेरी जान लेकर जो हवा बाहर निकलने वाली है वह रुक रही है। **(रमजाना पंखा लेकर झलना बन्द कर देती है)** बहुत···बहुत थोड़ी देर है अब मेरे मरने में।···इसी···इसी खेमे से शाहजादा सुलताना दानियाल ने इन्तकाल फरमाया था और इसी में यह मुहम्मद अमीन दीवाना भी बहिश्त को जाने वाला है। मरने के बाद क्या शाहजादा और क्या भिखारी, सब एक से। ख़ुदा के दरवार में शाहजादा और मामूली आदमी में कोई फर्क थोड़े ही होता है। वहाँ सब एक संग।···और देखो खानखाना साहब ने जाना बेगम को तो मरने से रोक लिया हालाँकि वह हिन्दुओं में जैसी सती होती हैं, वैसी हैं और हिन्दुओं की चितायें, जिस पर सती जलती हैं, उसी तरह यह शाहजादे की कब्र में दफन होना चाहती थीं। पर रमजाना, प्यारी रमजाना, दिलरुबा रमजाना, दिलाराम रमज़ाना तुम किसी के रोके न रुकना। इस्लाम मुर्दों के जलाने की इजाजत नहीं देता क्योंकि कयामत के दिन हम सब अपनी-अपनी कब्र में से उठने वाले हैं। परन्तु यदि तुम्हें दफन होने से तकलीफ हो तो मरने के बाद मुझे हिन्दू बना देना। मेरी चन्दन की चिता बनाना

खुद नहा धोकर। पाक हो अच्छे कपड़े पहन सोलह शृंगार कर खूब इत्र लगा, खुशबू वाले गजरे पहन मेरे साथ राम राम रटते हुए सती हो जाना। कैसे हैं वे—

गहु शरणागत राम कै भवसागर कै नाँव।
रहिमन जगत उधार कर और न कछू उपाव॥
राम नाम जानो नहीं जानो सदा उपादि।
कहि रहीम तेहि आपुनो जनम गँवायो वादि॥

और यहाँ तक इस दुनियाँ का मामला है--

सदा नगारा कूच कर बाजत आठो याम।
रहिमन या जग आइ कै को करि रहा मुकाम॥

हम तुम दोनों बहिश्त में मिलेंगे। वहाँ कोई मरता नहीं, इसीलिए सदा साथ रहेंगे (**कुछ रुककर**) अच्छा दो वचन मेरे मरने के बाद एक क्षण भी जिन्दा न रहोगी।

[रमजाना कुछ नहीं बोलती।]

मुहम्मद अमीन

नहीं, नहीं दोगी वचन ? तुम नहीं चाहतीं कि में आराम से मरूँ ?

[रमजाना फिर कुछ नहीं बोलती।]

मुहम्मद अमीन

(सफेद चादर में से दोनों हाथ निकालकर उसके हाथ पकड़कर) रमजाना, प्यारी रमजाना, जान से भी प्यारी रमजाना, दिलरुबा रमजाना, दिलाराम रमजाना, जब तक मुझे यह यकीन न हो जाये कि मेरे मरने के बाद भी तुम किसी की नहीं होगी और मेरे मरने के बाद इस नापाक दुनियाँ में एक क्षण भी जीवित न रहोगी तब तक मैं कैसे मरूँ ! करो वादा रमजाना !

रमजाना

पर जो वादा तुम चाहते हो वह वादा मैं करूँ क्योंकर ?

मुहम्मद अमीन

क्यों ?

रमजाना

तुम मुझसे यह वचन लेना चाहते हो न कि तुम्हारे मरने के बाद मैं एक क्षण भी जिन्दा न रहूँ।

मुहम्मद अमीन

बिल्कुल।

रमजाना

अब तुम्ही सोचो कि यदि मैं अपने को दफना कर या मरने के बाद तुम्हें हिन्दू बनाकर तुम्हारे साथ सती भी होना चाहूँ तो भी उसमें कुछ समय तो लगेगा न !

मुहम्मद अमीन

(**विचारते हुए**) हाँ, यह तो ठीक है। (**कुछ रुककर**) तो तुम इतनी देर तक जीवित रह सकती हो।

[फहीम का प्रवेश।]

फहीम

क्या, क्या हुआ दीवाना ? मुर्दे के कफन को ओढ़े यों किस तरह पड़ा है ?

मुहम्मद अमीन

काम न काहू आवहीं मोल रहीम न लेय।
बाजू टूटे बाज के साहब चारा देय॥

फहीम

(**रमजाना से**) रमजाना, यह सब क्या माँजरा हैं ?

रमजाना

यह कहते हैं कि यह मर रहे हैं। और कहते हैं कि शाहजादा सुलतान दानियाल की कब्र में दफन होने की जाना बेगम की इच्छा होने पर भी

चाहे उन्हें दफन होने से खानखाना ने रोक लिया हो पर मैं या तो उनकी कब्र के साथ दफन होऊँ या मरने के बाद इनको हिन्दू बनाकर इनकी चिता के साथ जल जाऊँ।

फहीम

(**जोर से हँसते हुए**) शाहजादा सुलतान दानियाल के मरने की वजह से इस दीवाने को भी मरना सूझा है और इसने जो जाना बेगम की सती होने की इच्छा देखी उससे तुम्हें भी अपने साथ मरने को कह रहा है। सचमुच दीवाना है यह या शाहजादा दानियाल के समान दारू पीने लगा है।

मुहम्मद अमीन

(**एकदम से उठते हुए**) खबरदार यदि दारू पीने का इल्जाम लगाया। कुरान शरीफ में दारू पीने की मुमानियत है। मैंने जिन्दगी भर भी दारू को छुआ नहीं है।

रमजाना

पर तुम उठ कैसे गये, मर रहे थे न।

मुहम्मद अमीन

इस फहीम ने दारू की बात कह मेरा मरना मुल्तवी कर दिया। इसी तरह एक दफा तुमसे शादी का वादा लेकर मरना मुल्तवी हुआ था।

फहीम

गनीमत है कि तुम्हारा मरना मुल्तवी होता जाता है।

मुहम्मद अमीन

मरना तो मुल्तवी ही किया जा सकता है, हमेशा को बन्द नहीं किया जा सकता।

[**नेपथ्य से जाना बेगम के गाने की आवाज आती है।**]

फहीम

अच्छा, चल, चल उठा इस कफन को। तू कहता ही है कि तेरा मरना मुल्तवी हुआ है, फिर कभी काम पड़ेगा इस कफन का। जाना बेगम आ रही है नमाज और कृष्ण-पूजा के लिए।

[तीनों का प्रस्थान। हाथ में पूजा के सामान की थाली लिए जाना बेगम का प्रवेश। उसके चेहरे पर शोक का साम्राज्य है। वस्त्र काले हैं और सारा शरीर भूषणों से रहित। जाना बेगम गुनगुनाते हुए पूजा की थाली एक चौकी पर रख पहले नमाज पढ़ती है और उसके बाद गाते हुए कृष्ण-पूजा कर आरती कहती है।]

मन फूला-फूला फिरै जगत में कैसा नाता रे॥
माता कहै यह पुत्र हमारा बहिन कहै बिर मेरा।
भाई कहै यह भुजा हमारी नारि कहै नर मेरा॥
पेट पकरि के माता रोवै बाँह पकरि के भाई।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै हंस अकेला जाई॥
जब लगि माता जीवै रोवै बहिन रोवै दस मासा।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै फेर करै घर बासा॥
चारगजी चरगजी मँगाया चढ़ा काठ की घोड़ी।
चारों कोने आग लगायी फूँक दियो जस होरी॥
हाड़ जरै जस लाह कड़ी को केस जरै जस घासा।
सोने ऐसी काया जरि गई कोई न आयो पासा॥
घर की तिरिया देखन लागी ढूँढि फिरी चहुँ देसा।
कहत कबीर सुनो भई साधो छोड़ो जग की आसा॥

[गीत पूरा होते होते रहीम का प्रवेश।]

रहीम

(एक दूसरी चौकी पर बैठते हुए) तो, बेटी, तुम्हारा भी अब वही कार्यक्रम हो गया जो तुम्हारी माँ का था। छहों वक्त नमाज पढ़ती और सुबह शाम कृष्ण-पूजन करती हो।

जाना बेगम

(**एक दूसरी चौकी पर बैठते हुए दीर्घ निःश्वास छोड़**) जाना चाहती थी उनके साथ, आपने जाने न दिया। यदि आप यह न कहते कि माँ के जाने के बाद अब बुढ़ापे में कौन आपकी हिफाजत करेगा, मेरा जाना कभी न रुकता। पर···पर···

रहीम

(**बीच ही में**) पर बेटी मेरे लिए भी तुम्हारा कुछ फर्ज था, बुढ़ापे में बेटे माँ-बाप की खिदमत, सँभाल नहीं कर सकते, बेटियाँ ही कर सकती हैं। फिर तुम्हारी माँ के बिना मेरा जीवन जैसा हो गया है उसे तुम जानती हो। तुम भी चली जातीं तब तो मैं आत्महत्या कर लेता।

जाना बेगम

इसीलिए तो नहीं गयी। अब आपकी सेवा-नमाज और कृष्ण-पूजा ही मेरे जीवन का अवलम्ब है। आपको देखते ही याद आ जाता है, आपके प्रति मेरा कर्त्तव्य। नमाज पढ़ती हूँ तब राहत मिलती है कुरान शरीफ़ की आयतों से और जब कृष्ण-पूजा कर आपके, सूरदास के, तुलसीदास के, कबीर के और मीरा के भजन गाती हूँ भूल जाती हूँ अपने आपको।

रहीम

तुम जानती ही हो गोस्वामी तुलसीदास जी और इन भक्त कवियों का जो रास्ता है, वही मैंने हमेशा ठीक रास्ता माना है और अब तो जल्दी-से-जल्दी उसी रास्ते को मैं भी पकड़ना चाहता हूँ। शुरू में कुछ इच्छाएँ और आकांक्षाएँ थीं, राजसी वैभव की। उसके लिए जोश और खरोश था, न जाने कितने जंग लड़े। जैसे-जैसे वैभव बढ़ा, इज्जत बढ़ी, विराग भी बढ़ा। एक दिन गोस्वामी तुलसीदास जी के दर्शन किये जानती हो न!

जाना बेगम

खूब जानती हूँ।

रहीम

इच्छा हुई इन्हीं का रास्ता पकड़ने की। पर उन्होंने ही इसके खिलाफ कुछ ऐसी दलीलें रखीं कि रुक जाना पड़ा और फिर मेरी किस्मत का जो सितारा चढ़कर सातवें आसमान पर पहुँचा था वहीं उतरकर रसातल में पहुँच गया। याद आने लगीं बीते वैभव और इज्जत की बातें और तय किया एक दफा···एक दफा फिर किसी तरह जो गया था उसे पा लेता तो ··· तो फिर मारता ठोकर उसे सदा के लिए। अब··· अब बेटी, इस दक्खिन की जीत से मुझे फिर से वह सब हासिल हो गया जो चला गया था। अब ··· अब इसे छोड़कर गोस्वामी तुलसीदास जी के मार्ग पर चलने में शायद बहुत देर न लगेगी।

[फहीम का शीघ्रता से प्रवेश]

फहीम

खुदावन्द ! आगरे से अभी-अभी हलकारा आया है। बादशाह सलामत शाहन्शाह अकबर इन्तकाल फरमा गये हैं। और शाहजादे सुलतान सलीम की जहाँगीर के नाम से तख्तनशीनी हुई है !

रहीम

(चौंककर खड़े हो) अच्छा ! बादशाह अकबर का देहान्त हो गया !

[जाना बेगम भी खड़ी हो जाती है। रहीम और जाना बेगम दोनों हाथ आगे कर सिर झुका आँखें बन्द कर लेते हैं। कुछ देर निस्तब्धता।]

रहीम

(कुछ देर बाद जाना बेगम से) देखती हो ··· देखती हो, मेरी तकदीर, बेटी ! इस घटना की वजह से अब ··· अब फिर मुझे गोस्वामी तुलसीदास जी के रास्ते पर चलना मुल्तवी करना होगा। कैसा यह संसारचक्र है !

यवनिका

चौथा अंक

पहला दृश्य

स्थान

आगरे के किले में दीवानेखास

समय

रात्रि

[दीवानेखास लाल पत्थर का है। दीवानेखास की बादशाही बैठक में चाँदी-सोने के गंगा-जमनी सिंहासन पर जहाँगीर बैठा हुआ है। सिंहासन पर चाँदी-सोने की गंगा-जमनी चोबों पर मोतियों की झालरों वाला जरी का शामयाना है। सिंहासन के दोनों ओर दो बाँदियाँ है, एक बादशाह पर चँवर डुला रही है और एक पंखा। सिंहासन के नीचे बिछावन पर कुछ मुसाहब बैठे हैं। कुछ राजकर्मचारी, शरीररक्षक और नौकर आदि हाथ बाँधे इधर-उधर खड़े हैं। नर्त्तकी का नृत्य हो रहा है। नृत्य पूर्ण होने पर दरबान का प्रवेश।]

दरबान

(कोरनिस कर) जहाँपनाह, खानखाना अब्दुल रहीम खाँ दक्खिन से आ गये हैं और खिदमत में हाजिर होना चाहते हैं।

जहाँगीर

बड़ी खुशखबरी सुनायी तूने दरबान। खानखाना को सम्मान के साथ ले आओ।

[दरबान जाता है और रहीम के साथ फिर आता है। रहीम के संग उसके भी कुछ मुसाहब और शरीररक्षक हैं। कुछ नौकर भी हैं।

एक नौकर के सिर पर जरी के कपड़े से ढंका हुआ एक बड़ा थाल है। रहीम के प्रवेश करते ही जहाँगीर को छोड़ दीवानेखास में बैठे हुए बाकी सब लोग खड़े हो जाते हैं। रहीम आगे बढ़ झपटकर जहाँगीर के पैरों में गिर पड़ता है। बादशाह उठकर रहीम को उठा अपनी छाती से लगा लेता है। कुछ देर बाद जहाँगीर फिर सिंहासन पर बैठता है और रहीम नौकर के सिर पर से जो कपड़े से ढका हुआ थाल था उसका कपड़ा हटा उसे जहाँगीर के पैरों के नजदीक रखता है। इस थाल में दो मोतियों के हार, अनेक हीरे और मानिक हैं। यह थाल रख रहीम अपने खीसे से एक सुन्दर कागज निकालता है और उसे बादशाह को देता है। जहांगीर बड़े ध्यान से उस कागज को पढ़ता है और फिर जोर से पढ़ता है।]

जहाँगीर

जो रहीम गति दीप कै सुन सपूत कै सोय।
बड़ो उजेरो तेहि रहे गये अंधेरो होय॥
रहिमन राज सराहिये शशि सम सुखद जो होय।
कहा बापुरो भानु है, तपे तरैयन खोय॥
जे गरीब परहित करैं ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापरो कृष्ण मिताई जोग॥
बड़े दीन के दुख सुने लेत दया उर आनि।
हरि हाथी सों कब हुती कहु रहीम पहिचानि॥
रहिमन कबहू बड़ेन के नाहिं गरब कर लेश।
भार धरे संसार कर तऊ कहावत शेष॥
क्षमा बड़न को चाहिये छोटन कहँ उत्पात।
का रहीम हरि कर घटेउ जो भृगु मारी लात॥
घर डर गुरु डर बंस डर डर लज्जा डर मान।
अस डर जेहि के जिय बसे तिन पाया रहिमान॥

यों रहीम सुख दुख सहत बड़े लोग सह साँति ।
उवत चन्द जेहि भाँति सों अथवत ताही भाँति ।।

खूब ! खानखाना खूब ! अब तो मुल्क भर में तुम्हारी शायरी मशहूर है । (**रत्नों की ओर संकेत कर**) इन लाखों की मोतियों की मालाओं और हीरे माणिक की नजर से कहीं ज्यादा मूल्यवान हैं तुम्हारे ये दोहे । और फिर किस खूबी के साथ तुमने इन दोहों में मॉबदौलत को सपूत कह, मॉबदौलत का शासन कैसा होना चाहिये यह कहा है । गरीबों के साथ मॉबदौलत का कैसा व्यवहार हो यह बताया है । बढ़ाई किसमें है यह दिखाया है । क्षमा और डर की खूबी बतायी है । और माँबदौलत का यह राज्य अन्त तक एक-सा चले इसके लिए आखिर में मॉबदौलत को दुआ भी दी है । खूब ! खानखाना खूब !

[रहीम फिर कोरनिस करता है ।]

जहाँगीर

बैठो, खानखाना, बैठें सब लोग ।

[रहीम बैठ जाता है । सब लोग, जो पहले बैठे थे और खड़े हो गये थे, वे भी बैठ जाते हैं ।]

जहाँगीर

मॉबदौलत ने कितनी वाट देखी तुम्हारी खानखाना ! तख्तनशीनी को तीन वर्ष होते आते हैं, तुम मरहूम शाहन्शाह के बड़े विश्वासपात्र थे । तुम्हें तो मॉबदौलत की इससे बहुत पहले सुधि लेना चाहिये थी ।

रहीम

दक्खिन में भी जहाँपनाह की ही सेवा कर रहा था । मुगल राज्य में अब तक दक्खिन ही झगड़े की जड़ रहा है । सोचा कि स्वर्गीय शाहन्शाह के इन्तकाल की वजह से दक्खिन में फिर कोई गड़बड़ न हो जाय इसीलिए इतने दिनों तक वहाँ रुका रहा । जब विश्वास हो गया कि मेरे हटने से भी अब वहाँ कोई पंचायत न होगी तब खिदमत में हाजिर हुआ आलीजाह !

जहाँगीर

तुमने बुद्धिमानी का काम किया इसमें शक नहीं, परन्तु मॉबदौलत तुमसे मिलने के लिए बेचैन थे।

रहीम

बेचैनी तो मुझे भी कम नहीं थी आलीजाह ! किन्तु कर्त्तव्य आने नहीं दे रहा था।

जहाँगीर

तुम भी कितने बेचैन थे यह तो आज के तुम्हारे आनन्द और उछाह के आवेश से ही मालूम हो रहा था। आते वक्त तुम शायद यह भी नहीं जान रहे थे कि तुम पाँव से आ रहे हो या सिर से। कितनी व्याकुलता से तुमने अपने को मेरे पाँव में डाल दिया और मैंने भी किस तरह उठाकर तुम्हें छाती से लगा अपनी छाती को ठण्डा किया।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

रहीम

दक्खिन में अब पूरा अमन है। जहाँपनाह ! बाकी सल्तनत में भी चैन की वंशी बज रही है। इसीलिए जहाँ अब मैं आलीजाह के दर्शन करने आया हूँ वहीं आलीजाह से छुट्टी भी माँगने।

जहाँगीर

(**कुछ आश्चर्य से**) छुट्टी ! कैसी छुट्टी खानखाना ?

रहीम

शाहन्शाह मरहूम की जितनी सेवा कर सकता था, की जहाँपनाह ! हुजूर की तख्तनशीनी को भी तो तीन वर्ष हो गये। इन तीनों सालों में सल्तनत मुगलिया की जो सेवा बन पड़ी वह भी की आलीजाह ! अब बूढ़ा हो रहा हूँ, अपना दूसरा लोक भी कुछ सुधार लूँ, शेष जीवन गोस्वामी तुलसीदास जी के चरणों में बिताना चाहता हूँ।

जहाँगीर

(अट्टहास कर) तो खानखाना फकीर होना चाहते हैं। वाह, वाह ! यह खूब सोचा तुमने। सिपहसालार के साथ शायर भी जो हो। (कुछ रुककर) इच्छा बुरी नहीं है, पर अभी बहुत जल्दी है खानखाना। अभी तुम्हें कुछ और महत्व के काम करने हैं।

रहीम

दुनियाँ के इन कामों का कभी अन्त होता है जहाँपनाह ! मेरे मन का भी अब यह हाल हो गया है—

तैं रहीम मन आपुनो कीन्हों चारु चकोर।
निसिवासर लाग्यो रहे कृष्णचन्द्र की ओर॥

जहाँगीर

पर, खानखाना ! यह भी तो तुम्हीं ने लिखा है !

तन रहीम है कर्मवश मन राखो उहि ओर।
जल में उलटी नाव ज्यों खैंचत गुन के जोर॥

सब मुसाहब

(एक साथ) वाह-वाह ! जहाँपनाह ! वाह-वाह !

रहीम

लेकिन जहाँपनाह ! मेरे मन में अब हमेशा उठा रहता है—

कहु रहीम केतिक रही केतिक गयी बिहाय।
माया ममता मोह में अंत चलै पछताय॥

और—

सौदा करो सो करि चलो रहिमन याही हाट।
फिर सौदा पइयो नहीं दूरि जान है बाट॥

और फिर कहीं ऐसा न हो आलीजाह !

रहिमन कुटिल कुठार ज्यों करि डारै दुइ टूक।
चतुरन के कसकत रहै समय चूक कै हूक॥

क्योंकि जहाँपनाह, मैं वैसा नहीं बनना चाहता जिसके लिए मैंने ही कहा है—

रहिमन नीर पखान भीजै पै सीझै नहीं।
तैसइ मूरख ज्ञान बूझै पै सूझै नहीं॥

जहाँगीर

बहुत दिन नहीं खानखाना, मॉबदौलत तुम्हें बहुत थोड़े दिन रोकेंगे, दो बरस, सिर्फ दो बरस !

[रहीम कुछ उत्तर न दे सिर नीचा कर लेता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

जहाँगीर

तुम जैसा वफादार, तुम जैसा खैरख्वाह, मॉबदौलत को निराश करेगा !

कुछ मुसाहब

(एक साथ) हरगिज नहीं, हरगिज नहीं !

[रहीम फिर भी कुछ नहीं बोलता। फिर कुछ देर निस्तब्धता।]

जहाँगीर

बोलो, बोलो, खानखाना !

रहीम

क्या कहूँ जहाँपनाह ! कहीं ऐसा न हो···कहीं ऐसा न हो···

जहाँगीर

(बीच में) मॉबदौलत तुमसे दो, केवल दो साल और चाहते हैं। दक्खिन के बाकी भाग को जीतकर सल्तनत मुगलिया में और शामिल कर दो। इसके बाद चले जाओ फकीर होकर गोस्वामी तुलसीदास जी के पास। और इस काम के लिए लो बादशाही तबेले का सबसे अच्छा ईरान के शाह को भेजा हुआ सामन्द घोड़ा, जैसा घोड़ा अभी तक कभी हिन्दोस्तान में नहीं आया। इसके लिए लो लड़ाई में अपना सानी न रखने

वाला लड़ाका फतूह हाथी। और उसके साथ बीस हाथी और। इसके लिए लो दक्खिन की अभी जो सेना है उसके अलावा बारह हजार सवार और, और इसके लिए लो दस लाख रुपये, मॉबदौलत की जड़ाऊ तलवार के साथ। मॉबदौलत ने तुम्हारे आने के पहले ही यह सारा इन्तज़ाम तुम्हारे लिए तय करके रखा था।

एक मुसाहब

कीजिये मंजूर खानखाना साहब ! कीजिये मंजूर !

दूसरा मुसाहब

ऐसी सहायता पाकर तो कोई दक्खिन क्या सारे संसार को जीत लेता।

तीसरा मुसाहब

आप पर आलीजाह की खास नवाजिश है। इसीलिए तो···

बहुत से मुसाहब

(**एक साथ बीच ही में**) बेशक, बेशक।

रहीम

क्या कहूँ ! मैंने ही नहीं, पुरखों ने जहाँपनाह का नमक खाया है, शरीर की हर हड्डी उसी नमक से बनी है। रग-रग में इसी नमक का खून बह रहा है। मैं जहाँपनाह को अप्रसन्न कर थोड़े ही छुट्टी लेना चाहता था ! आलीजाह की आज्ञा का उलंघन किस मुँह से कर सकता हूँ !

जहाँगीर

बहुत खुश, बहुत खुश हुए मॉबदौलत, तुम्हारी इस नमकहलाली, खैरख्वाही, वफादारी और जिन्दादिली से ! (**कुछ रुककर नर्त्तकी से**) अच्छा, गाओ कोई अच्छी चीज, कवि रहिमन की ही।

[**नर्त्तकी गाना आरम्भ करती है।**]

कलित ललित माला वा जवाहिर जड़ा था।
चपल चखन वाला चाँदनी में खड़ा था॥

कटि नट बिच मेला पीत सेला नवेला।
अलि वन अलबेला यार मेरा अकेला॥
कठिन कुटिल कारी देख दिलदार जुलफैं।
कलि कलित निहारैं आपने दिल की कुलफैं॥
सकल शशिकला को रोशनी-हीन लेखौं।
अहह! ब्रजलला को किस तरह फेर देखौ॥
दृग छकित छबीली छैलरा की छरी थीं।
मड़ि-जटित रसीली माधुरी मूँदरी की॥
अमल कमल ऐसा खूब से खूब देखा।
कहि न सकत जैसा स्याम का हस्त रेखा॥
जरद वसन वाला गुल चमन देखता था।
झुक झुक मतवाला गावता रेखता था॥
श्रुति युग चपला से कुंडलें झूमते थे।
नयन कर तमाशे मस्त ह्वै घूमते थे॥
तरल तरनि सी है तीर सी नोक दारैं।
कमल अमल सी हैं दीर्घ हैं दिल बिदारैं॥
मधुर मधुम हेरैं मान मस्ती न राखैं।
विलसति मन मेरे सुन्दरी श्याम आँखैं॥
भुजंग जुग किधौं है काम कमनैत सोहैं।
नटवर! तव मोहैं बाँकुरी मान भौंहैं॥
सुनु सखि! मृदुवानी वे दुरस्ती अकिल में।
सरल सरल सानी कै गई सार दिल में॥
पकरि परम प्यारे साँवरे को मिलाओ।
असल अमृत प्याला क्यों न मुझको पिलाओ॥

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान

बुरहानपुर के शाही महल में रहीम का कमरा

समय

प्रातःकाल

[कमरा ईंट चूने की दीवालों का है। दीवालें रंगी हुई हैं। आरायशी सामान से कमरा सजा हुआ है। श्रीकृष्ण और राधा की मूर्तिवाला सिंहासन कमरे में मौजूद है। मुहम्मद अमीन और रमजाना खड़े हुए एक दूसरे से खूब झगड़ रहे हैं। दोनों की अवस्था अब काफी बढ़ गयी है जो उनके बालों से ज्ञात होता है। कान के समीप दोनों के बाल श्वेत हो चुके हैं। रमजाना के हाथ में उसका जूता है।]

रमजाना

हाँ, मैं फिर कहती हूँ, बार-बार कहती हूँ कि अब तूने अगर मुझे कुलटा कहा और—'जस मदमातुल हथिया हुमकत जाय, चितवति छैलि तरुणियाँ मुँह मुस्काय' शेर को फिर से पढ़ा तो मैं जूती लगाऊँगी।

मुहम्मद अमीन

पर इस उम्र में भी जब तू नौजवानों से आँखें लड़ाती है तब तुझे कुलटा न कहूँ तो क्या कहूँ ?

'जस मदमातुल हथिया हुमकत जाय' तेरे लिए इस विशेषण को काम न लाऊँ तो किस विशेषण को काम में लाऊँ ?

रमजाना

मैंने किस मुँए नौजवान से आँखें लड़ायीं ? बता नाम।

मुहम्मद अमीन

एक हो तो नाम बताऊँ, किसी भी नौजवान को देखते ही सीधी नहीं, तेरी चितवन हो जाती है बाँकी।

बांकि चितवन चित गड़ी सूधी तो कछु धीम ।
गरमी तें बढ़ि होत दुख काढ़ि न कढ़त रहीम ॥

रमजाना

अगर तुझे मुझ पर ऐसा ही शक हो गया है तो क्यों नहीं तलाक दे देता मुझको । इस्लाम में औरत को तलाक देने का अधिकार नहीं है, नहीं तो सच मान जिस वक्त तूने मुझ पर शक किया था उसी वक्त मैं तुझे तलाक दे देती । जब तूने हजार, लाख, करोड़, असंख्य बार मिन्नतें कीं और जब तू खुदकशी करने पर उतारू हो गया तब मैंने तुझसे शादी की थी । (**जूती फेंककर बैठ जाती है और फुक्का फोड़कर रोना आरम्भ करती है ।**)

मुहम्मद अमीन

अरी रो तो मत ! (**जब वह फिर भी रोना बन्द नहीं करती तब उसके पैर पकड़कर**) तेरे पैर पकड़ता हूँ रमजाना, तू रोना तो बन्द कर । प्यारी रमजाना, जान से ज्यादा प्यारी रमजाना, दिलरुबा रमजाना, दिलाराम रमजाना, रमजाना दीवाना, दीवाना रमजाना ।

रमजाना

(**एक साथ रोते और हँसते हुए**) ये आँसू मेरे दिल का सच्चा हाल बताते हैं—

रहिमन अँसुआ नयन ढरि जिय दुःख प्रकट करेइ ।
जाको घर ते काढिये क्यों न भेद कहि देइ ॥

मैं वफादार औरत हूँ, सच्ची वफादार ! और वफादार जोरू पर यदि सबसे बड़ा कोई इलजाम लगाया जा सकता है तो उसे बेवफा कहना, कुलटा कहना ।

मुहम्मद अमीन

(**रमजाना के दोनों काँखों में हाथ डाल उसे उठा छाती से लगाते हुए**) अब···अब कभी ऐसी गलती न करूँगा, पर तू जानती है, ऐसी

गलती मुझसे क्यों हो जाया करती है ?

रमजाना

(रोना और हँसना बन्द कर उसके आलिंगन से छूटते हुए) क्यों ?

मुहम्मद अमीन

इसलिए कि इस उम्र में भी तुझे इतना चाहता हूँ कि अपने उस प्रेम में सपने में भी किसी का शरीक होना बर्दाश्त नहीं कर सकता। यदि मेरे मन पर शक की कोई दूर की हलकी छाया भी पड़ जाय तो मेरे मन का सारा संतुलन चला जाता है।

रहिमन मारग प्रेम कर मत मतिहीन मझाव।
जो डिगिहों तो फिर कहूँ नहिं धरिबै को पाव॥

यदि मुझे भासता भी है कि मेरे लिए तेरा प्रेम डिग रहा है तो मुझे लगता है दुनियाँ में कहीं मेरे लिए पैर धरने को भी जगह नहीं रहेगी। हा-हा-हा।

प्रेम पंथ सो कठिन सब कोउ निबहत नांहि।
रहिमन मैंन तुरंग चढ़ि चलिबौ पावक मांहि॥

[फहीम का प्रवेश]

फहीम

(एक ओर पड़ी हुई जूती को देखकर) अच्छा, यहाँ तक नौबत आ गयी !

रमजाना

(जल्दी से जूती पहन) नहीं जी, यह तो यों ही जूती मेरे पैर से सरक गयी थी।

फहीम

पर यहाँ तो फिसलने की कोई चीज़ दिखायी तो नहीं दे रही।

मुहम्मद अमीन

मियाँ, फहीम, सच्चे दोस्त से क्या दुराव ! मैं तुम्हें सच्ची बात बता देता हूँ। मैंने इन्हें कुलटा कह दिया, भला वफादार जोरू कभी इस तरह की बात बर्दाश्त कर सकती है ! इन्होंने अपनी जूती से मेरी उचित ही खबर लेना चाही ! लेकिन तुम जानते ही हो कि आखिर मियाँ-बीवी का झगड़ा था, हो गया खत्म ! हा-हा-हा ! रमजाना दीवाना, दीवान रमजाना, कभी दीवाना रमजाना अलग हो सकते हैं।

[रहीम का प्रवेश। वह अब वृद्ध हो गया है, यह उसके श्वेत बालों से ज्ञात होता है। रहीम को देखकर ये तीनों बड़े अदब से खड़े हो जाते हैं।]

रहीम

अच्छा तुम लोग अभी चल दो यहाँ से और जरा जाना बेगम को भेज देना।

[तीनों का आदाब बजाकर प्रस्थान। रहीम् बेचैनी से इधर से उधर और उधर से इधर टहलता है। जाना बेगम का प्रवेश। उसकी अवस्था भी बढ़ गयी है; उसके चेहरे, विशेषकर आँखों के चारों ओर झुर्रियों से मालूम होता है।]

रहीम

बेटी···बेटी अब···अब तो एक क्षण भी जीने की इच्छा नहीं है। **(एक चौकी पर बैठते हुए)** दिल्ली में मकबरा बनवाया था, सोचता था वहाँ तेरी माँ को दफनाऊँगा। वह भी वहाँ न दफनायी जा सकी और जान पड़ता है मैं भी इसी दक्खिन में कहीं दफना दिया जाऊँगा और शायद ही मरने से पहले दिल्ली पहुँच सकूँ।

जाना बेगम

(रहीम के निकट की एक दूसरी चौकी पर बैठते हुए) क्यों, क्या फिर कोई नयी बुरी खबर मिली है !

रहीम

अब जीवन में अच्छी खबर कहाँ रखी है । जब कोई भी खबर मिलती है बुरी ही तो मिलती है। विपत्तियाँ तो पहले भी आयीं थी पर उस समय में कहा करता था—

अब रहीम चुप करि रहौ समझु दिनन को फेर।
जब दिन नींके आइहैं बनति न लगिहै देर।।

पर···पर बेटी, अब···अब तो फिर कभी अच्छे दिन आयँगे इसकी आशा ही नहीं रही । सबसे नयी और बुरी खबर अभी-अभी यह मिली कि शाहजादे सुलताना खुर्रम ने वालिद के खिलाफ बलवा किया है ।

जाना बेगम

(**कुछ आश्चर्य से**) अच्छा !

रहीम

और यह बलवा इसी दक्खिन से हुआ है, जहाँ हम लोग रहते हैं ।

जाना बेगम

ओह !

रहीम

बेटी, कितनी बड़ी गलती की मैंने उस वक्त जब दो साल के लिए दक्खिन आना मंजूर कर लिया । दो साल की जगह कितने वर्ष बीत गये इस दक्खिन में ! यहीं तुम्हारे दो भाइयों के मरने की खबर मिली ।

[रहीम दोनों हाथों पर अपना सिर रख लेता है, कुछ देर निस्तब्धता ।]

जाना बेगम

लेकिन, कीजियेगा क्या ? जो कुछ बदा है, उसे तो भोगना ही होगा। इस भावी के सम्बन्ध में आपने स्वयं भी कितना लिखा है—

भावी ऐसी प्रबल है कह रहीम सब जान।
भाव केहि का ना दही भावी दह भगवान ॥

रहीम

(**हाथों पर से सिर उठाते हुए**) कभी मैंने एक घनाक्षरी लिखी थी, मैं नहीं जानता था कि मेरे खुद का जीवन भी सदा उस घनाक्षरी के समान हो जायगा—

बड़ेन सों जान पहिचान तो रहीम कहा,
जो पै करतार ही न सुख देनहार है।
सीतहर सूरज सों प्रीति करी पंकज ने,
तऊ कंज वनन को जारत तुषार है॥
उदधि के बीच धर्‌यो शंकर के सीस वस्यो,
तऊ न कलंक नस्यो सीस में सदा रहै।
बड़े रिझवार हैं चकोर दरबार देख्यो,
सुधाधर यार ए पै चुगत अँगार है॥

जाना बेगम

आज तक यह कौन जान पाया है कि उसका संपूर्ण जीवन किस तरह बीतने वाला है। इसी बेबसी की दशा पर तो आपने लिखा है—

कहु रहीम कैसे बने अनहोनी हुइ जाय।
मिलो रहे औ ना मिले तासों कहा बसाय॥

[फिर कुछ देर निस्तब्धता।]

रहीम

वर्षों से बेटी, बदलना चाहता था जीवन के मार्ग को। कितना और किस तरह छटपटाया हूँ गोस्वामी तुलसीदास जी के निकट जाकर इनका सा जीवन बिताने के लिए। पर मेरा तो सदा यह हाल रहा है—

जो विषया संतन तजी मूढ़ जाहि लापटात।
ज्यों नर डारत वमन करि स्वान स्वाद सों खात॥

(**कुछ रुककर साहस के साथ**) लेकिन···लेकिन बेटी, इस वक्त··· इस वक्त इस सल्तनत मुगलिया में जो कुछ हो रहा है, उसे मेरे समान

व्यक्ति किस तरह बर्दाश्त कर सकता है। दरअसल, इस समय बादशाह जहाँगीर राज्य नहीं कर रहे हैं।

जाना बेगम

हाँ, इस समय तो राज्य है बेगम नूरजहाँ का!

रहीम

बिल्कुल ठीक कहती हो। शेर अफगन की बेवा भाग्य से हो गयी हिन्दोस्तान की मलिका; छोटा खानदान, छोटा दिल, छोटी औकात।

बड़े बड़ाई न तजैं लघु रहीम इतराइ।
राइ करोंदा होत है कटहर होत न राइ॥

इसीलिए इतनी उखाड़-पछाड़, इतने षडयन्त्र! पहले शाहज़ादा सुलतान परवेज को इसने न बढ़ने देकर शाहजादा खुर्रम को बढ़ाया, क्योंकि इसके भाई आसिफखाँ की बेटी मुमताज बेगम खुर्रम को दी गयी है। अब जब शेर अफगन से पैदा हुई अपनी बेटी का सवाल आया तब उसे शाहजादे सुलतान शहरयार को देकर खुर्रम को गिरा शहरयार को बनाना चाहती है।

जाना बेगम

मैं समझती हूँ मुगल सल्तनत की सबसे बड़ी कमजोरी वलदीयत का तय न करना है।

रहीम

बिल्कुल ठीक कहती हो तुम। इसीलिए ज्योंही बादशाह बूढ़े होते हैं या कमजोर त्योंही हर शाहजादा बादशाह होने का जी तोड़ प्रयत्न करना शुरू करता है। शाहजादा सुलतान खुर्रम का यह बलवा भी इसी बात की कोशिश है। पर उसमें उसकी गलती न होकर गलती है उस बज्जात बेगम नूरजहाँ की। और जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरी सहानुभूति एक ओर यदि बादशाह सलामत से है तो दूसरी तरफ सुलतान खुर्रम से भी, पर नूरजहाँ से कतई नहीं। और फिर अगर मुझ पर बादशाह के अहसान हैं तो शाहजादे खुर्रम के भी कम नहीं।

जाना बेगम

हाँ, इसी बुरहानपुर में जब हम लोगों पर आफत आयी थी और आप तो जौहर कर आत्महत्या करना चाहते थे तब शाहजादा खुर्रम ने ही सहायता देकर हमें बचाया था।

रहीम

इसीलिए तो, जब हम दक्खिन में हैं, तब जहाँगीर से मेरी सहानुभूति होते हुए भी मैं उसे कैसे छोड़ सकता हूँ !

[रहीम का सिर झुक जाता है, फिर कुछ देर निस्तब्धता।]

रहीम

(सिर उठाते हुए) अच्छा, बेटी, गाओ, इस वक्त तो कोई ऐसा गीत गाओ, गोस्वामी तुलसीदास जी का, सूरदास का, कबीर का, मीरा का, किसी का भी जिससे कुछ देर के लिए तो दुनियाँ के इस प्रपञ्च से छुटकारा मिल मन को शांति मिले।

[जाना बेगम गाती है]

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई॥
भाई छोड्या बंधु छोड्या छोड्या सगा सोई।
साधु संग बैठ बैठ लोक लाज खोई॥
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई॥
दधि मथ घृत काढ़ लियो डार दई छोई।
राणा विष को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई॥
अब तो बात फैल पड़ी जाणे सब कोई।
मीरा राम लगण लागी होणी होय सो होई॥

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान

दक्षिण में शाहजादा सुलतान खुर्रम के शिविर
में शाहजादे का खेमा

समय

तीसरा पहर

[खेमा लगभग उसी तरह का है जैसा रहीम का था। शाहजादा खुर्रम और राजा भीम चौकियों पर बैठे हुए हैं। दोनों युवक हैं और उस काल की फौजी लिबास में। खुर्रम के हाथ में एक पत्र है।]

खुर्रम

खानखाना की जान बुरहानपुर में मैंने बचायी थी।

भीम

इसमें भी कोई सन्देह है शाहजादा साहब !

खुर्रम

इतने पर भी अगर उसको मेरे साथ न रहना था तो मैं उसे बाँधकर तो रखता न था। साफ-साफ कह देता और बादशाह सलामत के साथ, नहीं-नहीं दरअसल उस नूरजहाँ के साथ हो जाता।

भीम

परन्तु, शाहजादा साहब, आपके उपकार जो उसके ऊपर थे !

खुर्रम

मुझे कुछ सन्देह तो उसी समय हो गया था राजा साहब, जब वह मेरे लश्कर के एक कोस पीछे-पीछे रहता था। पर उस समय मैंने समझा कि बूढ़ा हो गया है, लड़ाई के कूच में भी कुछ आराम से चलना चाहता है। मैं यह नहीं जानता था कि वह इस तरह मुझे धोखा देने पर आमादा है।

भीम

महावतखाँ के पास जाने वाला वह कासिद पकड़ा गया और उसके पास खानखाना का यह पत्र मिल गया, नहीं तो ठीक समय न जाने ये महाशय क्या करते !

खुर्रम

(**पत्र को पढ़ते हुए**) लिखता है "सौ आदमी नजरों में मेरी देख-भाल नहीं रखते होते तो बेचैनी से कभी का उड़कर वहाँ पहुँच जाता।" धोखेबाजी इसके खानदान में है। इसके वालिद बैरमखाँ ने भी मरहूम बादशाह अकबर को इसी तरह धोखा दिया था। इसने पहले मेरे वालिद को धोखा दिया और अब मुझे।

भीम

आपने तो अब बुलाया तो है ही, देखें अब आपसे क्या कहता है !

[**दरबान का प्रवेश**]

दरबान

(**आदाब बजाकर**) हुजूर ने खानखाना साहब को बुलाया था, वह आ गये हैं।

खुर्रम

भेज दे उन्हें।

[**दरबान का प्रस्थान और रहीम का प्रवेश। रहीम आदाब बजाता है।**]

खुर्रम

(**बिना आदाब का उत्तर दिये ही हाथ में लिये हुए पत्र को रहीम को देते हुए अत्यन्त रुखाई से**) यह पत्र जनाब ने कासिद के हाथ बादशाह सलामत के, नहीं-नहीं उस नूरजहाँ के सिपहसालार महावतखाँ को भेजा था ?

रहीम

(पत्र को काँपते हाथों से लेकर इधर-उधर देख भर्राये हुए स्वर में) लिखा हुआ तो मेरा ही है, शाहजादा साहब ! लेकिन···लेकिन (चुप हो जाता है)

खुर्रम

लेकिन पर आप चुप कैसे हो गये, जनाब !

रहीम

मैं···मैं याद कर रहा था कि···कि क्या मैंने उसे महावतखाँ को भेजा था ?

खुर्रम

(कहकहा लगाकर) कल की बात और आप भूल भी गये ! बड़े··· बड़े सीधे आदमी हैं। सौ आदमी नज़रों में आपकी देखभाल न रखते होते तो उड़कर आप वहाँ पहुँच जाते ! खूब···बहुत खूब ! पहले ही क्यों नहीं कह दिया खानखाना साहब कि आपको मुझे नहीं बादशाह सलामत से, फिर भूल हुई, बादशाह सलामत से नहीं उस नूरजहाँ से सहानुभूति है। मुझे साफ-साफ इसीलिये शायद नहीं कह सके कि बुरहानपुर में मैंने आप पर जो उपकार किये थे उससे आप दबे हुए थे। क्यों ?

[रहीम कोई उत्तर न दे, सिर नीचा कर लेता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

खुर्रम

बोलिये, बोलिये; कुछ तो बोलिये ?

रहीम

क्या कहूँ, शाहजादा साहब !

खुर्रम

क्यों ? पत्र लिखने में अँगुलियाँ चलती थीं, जवाब देने में जबान नहीं चल रही है ?

रहीम

(**साहस से**) मैं अपना कसूर स्वीकार करता हूँ शाहजादा साहब। और मैंने जो कुछ इस पत्र में लिखा वह सच बात है। सौ आदमी नजरों में मेरी देखभाल नहीं रखते होते तो मैं उड़कर वहाँ; जरूर पहुँच जाता। पर किस लिए, जानते हैं ?

खुर्रम

किसलिये ?

रहीम

इसलिए कि मैं बाप-बेटों का यह झगड़ा आपके खानदान, सल्तनत मुगलिया और देश किसी के लिए भी लाभप्रद नहीं मानता। मैं वहाँ जाकर सुलह का प्रयत्न करता। मेरी जितनी सहानुभूति आपके साथ हैं उतनी ही बादशाह सलामत के साथ। इस राजनीति से शुरू से ही मुझे विराग रहा है। मैं जाने कब से इसे छोड़कर गोस्वामी तुलसीदास जी का शागिर्द होना चाहता था। मैं सदा इस राजनीति से बेचैन रहा हूँ और बाप-बेटों के झगड़े ने तो मेरी बेचैनी की कोई हद नहीं रखी है। क्या कहूँ !

खुर्रम

(**घृणा से हँसकर**) क्या कहूँ ! धोखेबाज ! दगाबाज ! अहसान फरामोश ! अपने धोखे और दगे को राजनीति से विराग की बात कह-कर छुपाना चाहता है। तुलसीदास जी का शागिद होना चाहता था और न जाने कब से ? बूढ़ा हो गया अब तक तो नहीं छोड़ी राजनीति और न हुआ तुलसीदास का शागिद। शायद मरने के बाद दूसरे जन्म में फकीर होगा। तू तो आधा हिन्दू है न ! राम और कृष्ण की पूजा करता है, उनकी प्रशंसा में कविता लिखता है, दूसरा जन्म भी मानता है। (**राजा भीम की ओर देख**) यह सब कोई बुरी बात नहीं, मरहूम बादशाह अकबर ने तो दीने इलाही भी निकाला था। मैं हिन्दू धर्म इस्लाम और सभी मज-

हबों को एक नज़र से देखता हूँ, पर किसी मजहब में भी धोखा-धन्धी तो जायज चीज नहीं है। परन्तु खानखाना में फरेब और मक्कारी चली आती है। तेरे वालिद ने मरहूम बादशाह अकबर को धोखा दिया था। तूने पहले मेरे वालिद को धोखा दिया और फिर मुझे। (**राजा भीम से**) राजा साहब ! युद्ध के ऐसे समय इस तरह के धोखेबाजों, दगाबाजों और मक्कारों पर मेहरबानी नहीं की जा सकती। डाल दीजिये इसे फौरन कैद में मय इसके लड़कों बच्चों के। इसने जो सौ आदमियों की नजरों में रहने का पहले से अपशकुन लिखा था वह इसके आगे आया।

रहीम

हाँ, हाँ, खुशी से डाल दीजिये मुझे कैद में, बुरी से बुरी कैद में।

रन वन व्याधि विपत्ति में रहिमन मरउ न रोइ।
जो रक्षक जननी जठर सो हरि गये न सोइ॥
रहिमन कोऊ का करै ज्वारी चोर लबार।
जो पत राखनहार है माखन चाखन हार॥

यवनिका

पाँचवा अंक

पहला दृश्य

स्थान

लाहौर में शाही महल का एक कमरा जिसमें रहीम ठहरा हुआ है

समय

तीसरे पहर के कुछ पूर्व

[ईंट चूने की दीवालें हैं जो रंगी हुई हैं। आरायशी सामान से कमरा सजा हुआ है। चाँदी का वह सिंहासन जिस पर राधाकृष्ण की मूर्ति है, कमरे में एक ओर रखा है। मुहम्मद अमीन का एक काज़ी के साथ प्रवेश। काज़ी बहुत बूढ़ा है। उसकी आँखों पर मोटे दल के काँचों का चश्मा है और उसके बगल में बहीनुमा पोथी दबी हुई है।]

मुहम्मद अमीन

बड़ी···बड़ी मेहरबानी की आपने काज़ी साहब जो मेरी तलाक दर्ज करने के लिए आप लाहौर के इस शाही महल में ही पधार कर आये। बैठिए और बस अब···इस तलाक को दर्ज कर लीजिये।

[काज़ी एक चौकी पर बैठ अपनी पोथी खोलता है।]

मुहम्मद अमीन

काज़ी साहब, बादशाह सलामत और शाहजादा सुलतान खुर्रम में किसी प्रकार सुलह होने का रास्ता निकाला? मेरे आका भी कैदखाने से छूट गये। मैंने अपनी व रमजाना की सुलह का भी किसी प्रकार रास्ता निकाला और वह है यह तलाक! रमजाना की कैद से मेरी रिहाई भी इसी तलाक से होगी। खानखाना साहब ने बिलकुल ठीक कहा था—

रहिमन व्याह व्याधि है सकहु तो जाही बचाय।
पाइन बेरी परत है, ढोल बजाय बजाय॥

इस दोहे को मैंने खूब रटा था और जब तक इस कमबख्त रमजाना को नहीं देखा था यह बात तयशुदा थी कि मैं विवाह नहीं करूँगा। परन्तु कभी-कभी जीवन में मैं चीजों को मुल्तवी कर दिया करता हूँ। दो दफा मरना भी मुल्तवी कर चुका हूँ। इसलिए ब्याह न करने के अपने निश्चय को भी मैंने मुल्तवी कर इस नामाकूल औरत से व्याह कर लिया। अब मैं अगर फिर अपने पुराने मुल्तवी किये हुए शादी न करने करने के निर्णय पर लौटकर आना चाहूँ तो इसके लिए तलाक ही तो रास्ता है।

[काज़ी अपनी पोथी देखता रहता है, और अभी भी चुप रहता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

मुहम्मद अमीन

काज़ी साहब, आपने जीवन में न जाने कितनी शादियाँ दर्ज की होंगी और न जाने कितनी तलाकें। यही करते करते तो आपके बाल सफेद हो गये। कोई आपने धूप में थोड़े ही पकाये हैं! यही करते-करते तो आपके दाँत टूट गये कोई पत्थर लेकर आपने दाँत थोड़े ही तोड़े हैं! यही करते-करते तो आपकी आँखों की ज्योत मद्दी पड़ गयी और ऐसी दलदार ऐनक आपको लगानी पड़ती है। यह चश्मा आप कोई शौक से थोड़े ही लगाते हैं! पर मैं कहता हूँ काज़ी साहब कि आपने अब तक मेरी जोरू के माफिक औरत न देखी होगी! बेगम साहिबा खाना नहीं पकातीं। बर्तन नहीं माँजतीं। कपड़े नहीं धोतीं। कोठरी तक साफ नहीं करतीं। उसे नौजवानों से आँखें लड़ाते-लड़ाते फुर्सत नहीं। देखिए मेरी मूँछें-दाड़ी, चूल्हा फूँकते-फूँकते मेरी दाड़ी-मूछें जल गयीं। देखिए मेरे हाथ, बर्तन माँजते-माँजते मेरे हाथों में घट्टे पड़ गये, कपड़ा धोकर निचोते-निचोते मेरे हाथ भर आते हैं, कोठरी झाड़ते-झाड़ते नाक और मुँह में ऐसी धूल भरती है कि पहरों खाँसता रहता हूँ। ऐसी बेहया और बदजात औरत

इस दुनियाँ में आज तक किसी को न मिली होगी।

[रमजाना का हाथ में झाड़ू लिए हुए प्रवेश।]

रमजाना

मुझे कहता है, बेहया ! और बदजात ! तू बेहया ! तू बदजात ! तेरा बाप बेहया, तेरा बाप बदजात !

[झाड़ू से मुहम्मद अमीन को ठोकना शुरू करती है और मुहम्मद अमीन भागता है। काज़ी इस भय से कि कहीं झाड़ न लग जाय जल्दी से अपनी पोथी बाँधता है और खड़ा होने लगता है। मुहम्मद अमीन के भागने पर रमजाना काज़ी की ओर घूमती है।]

रमजाना

तू यहाँ शाही महल में क्यों आया है ? चल भाग यहाँ से।

[काज़ी को भी दो-चार झाड़ू लगाती है। काज़ी भागता है। नेपथ्य में किसी के आने की आहट सुन रमजाना झाड़ से कमरा साफ करने लगती है। रहीम और जाना बेगम का प्रवेश। रहीम दरबारी लिबास में है।]

रहीम

तो ! दरबार में जा रहा हूँ, बेटी ! अब यह अन्तिम दरबार है और आखिरी बार दरबारी लिबास।

[रहीम एक चौकी पर बैठता है, जाना बेगम भी उसी के निकट एक दूसरी चौकी पर बैठ जाती है।]

रहीम

अब तक तो ऐसा होता रहा—

हरि रहीम ऐसी करी ज्यों कमान सर पूर।
खैंचि आपुनी ओर को डार दियो पुनि दूर॥

पर अब ऐसा भगवान न कर सकेंगे। उन्हें शरण में लेना ही होगा। बहुत भोगा, बेटी, बहुत भोगा ! अच्छे से अच्छा वक्त देखा, बुरे से बुरा

समय। कभी चढ़ाव, कभी उतार, कभी बड़ी से बड़ी फतह, कभी बुरी से बुरी हार, कभी सुन्दर हवेली, कभी कैदखाने की काल कोठरी, कभी लाखों के दान की शक्ति, कभी फाकेमस्ती, कभी खानखाना का खिताब, सल्तनत मुगलिया का महामंत्रित्व और कभी धोखेबाज, फरेबी, दगाबाज, अहसान फरामोश अपमानजनक शब्दों का सम्बोधन ! फिर मैंने देखा बेटी—

रहिमन असमय के परे हित अनहित हुइ जाय।
बधिक बधे मृगवान सों रुधिरै देत बताय॥

मैं सोचा करता था—

प्राप्य चलानधिकारान् शत्रुषु मित्रेषु बंधुवर्गेषु।
नापकृतं नोपकृतं नोपकृतं किं कृतं तेन॥

कभी-कभी अपने आप से यह भी कहता था—

रहिमन चाक कुम्हार का माँगे दिया न देइ।
छेद में डण्डा डारि कै चहै नाँद लइ लेई॥

पर···पर···वह सब भी मेरा भ्रम था। अब···अब और नहीं बेटी··· और नहीं, अब तो एक पैर कब्र में है, अब तो रहे हुए जीवन में एक ही साधना साधूँगा और वह होगी हरिचरण।

एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय।
रहिमन सींचे मूल का फूले फले अघाइ॥
बिंदु में सिंधु समान को कासों अचरज कहे।
हेरन हार हिरान रहिमन आपहि आपु में॥

[रहीम सिर झुका लेता है। जाना बेगम कोई उत्तर नहीं देती। कुछ देर निस्तब्धता।]

रहीम

और···और देखो तो यह राजनीति। बादशाह सलामत और शाहजादा खुर्रम में समझौता हो गया। बड़ों-बड़ों के झगड़े निपट जाते हैं, उनका कुछ नहीं बिगड़ता पर बीच वाले साफ हो जाते हैं। बादशाह और

शाहजादे के इस झगड़े का हमारे लिए यह फल हुआ कि मेरे पोते को मरवाया खुर्रम ने और मेरे रहे हुए लड़के को, तुम्हारे भाई दराबखाँ को, मरवाया बादशाह ने। इन घृणित हत्याओं में जिस महावतखाँ का हाथ रहा है वह...वह भी किसी तरह अपने किये का फल पा जाता। (फिर कुछ रुककर) जाने दो इसे भी। खुदा उसे उसके कामों का फल देगा। मुझे बुलाया है बादशाह ने, मेरे अपराध क्षमा कर मुझे खानखाना का खिताब फिर से लौटाने के लिए। बस...बस इसके बाद छोड़ दूँगा इस राजनीति को, तैयार रहो तुम भी।

[**जाना बेगम फिर भी कोई उत्तर नहीं देती। फिर कुछ देर निस्तब्धता।**]

रहीम

(**धीरे उठते हुए**) अच्छा तो चलता हूँ बेटी, दरबार का समय हो रहा है।

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान

लाहौर के शाही महल का आलम

समय

तीसरा पहर

[**ईंट-चूने से बना हुआ, विशाल आलम है। पीछे की दीवार से लगा हुआ चाँदी-सोने का सिंहासन है। सिंहासन पर जहाँगीर बैठा हुआ है। जहाँगीर अब वृद्ध हो गया है जो उसके श्वेत केशों से जान पड़ता है। बांदियाँ चँवर डुला रही हैं और पंखा झल रही हैं। सिंहासन के निकट एक चाँदी-सोने की चौकी पर शाहजादा खुर्रम बैठा है। सिंहासन के सामने बिछावन पर अनेक मुसाहब बैठे हुए हैं। इधर उधर शरीररक्षक और नौकर खड़े हैं। दरबान का प्रवेश।**]

(**कोरनिस कर**) जहाँपनाह ! अब्दुल रहीम खाँ खिदमत में हाजिर होना चाहते हैं।

दरबान

उन्हें इज्जत के साथ ले आओ।

[दरबान का प्रस्थान और रहीम का प्रवेश । रहीम कोरनिस कर अपना सिर बादशाह के कदमों में रखता है और जब बहुत देर तक सिर नहीं उठाता तब जहाँगीर कहता है ।]

जहाँगीर

माँबदौलत ने तुम्हारे सब कुसूर माफ कर दिये हैं। उठ जाओ, जो कुछ हुआ वह दैवसंयोग से हुआ। शायद न हमारे अख्तियार की बात थी और न तुम्हारे। अब ज्यादा सोच-संताप न करो। (**जब रहीम फिर भी सिर नहीं उठाता तब उसे उठाते हुए**) अच्छा, उठो, अब बैठो।

[रहीम उठकर बैठ जाता है और सिर अत्यधिक झुका लेता है। कुछ देर निस्तब्धता ।]

जहाँगीर

जैसा माँबदौलत ने अभी कहा, शाहजादा खुर्रम के साथ ही तुम्हारे भी सब कुसूर माफ कर दिये हैं। माँबदौलत तुम्हें खानखाना का खिताब और तुम्हारी जागीर फिर लौटाते हैं।

[रहीम खड़ा होकर फिर कोरनिस करता है और कोरनिस करने के बाद खड़े हो धीरे-धीरे कहता है ।]

रहीम

जहाँपनाह की इस इनायत के लिए यह अपराधी किन शब्दों में शुक्रिया अदा करे ! मुझ पर बुरहानपुर में शाहजादा सुलतान खुर्रम ने इतने अहसान किये थे कि मेरा उनका साथ न रहता तो अहसान फरामोशी होती आलीजाह ! पर वे खुद मौजूद हैं और जानते हैं कि मेरी भक्ति केवल उन्हीं के प्रति नहीं थी, (**जहाँगीर के पैरों की ओर इशारा कर**)

पर इन कदमों के प्रति भी उतनी ही थी। इसीलिए मैंने एक चिट्ठी भेजी थी सिपहसालार महावतखाँ को जिसमें लिखा था कि जो सौ आदमी मेरी देखभाल नहीं रखते होते तो मैं कभी का उड़कर वहाँ पहुँच जाता। शाहजादा सुलतान खुर्रम ने जो कुछ किया जहाँपनाह उसके मैं खिलाफ था। पर उनके अहसान की वजह से उनका साथ न छोड़ सकता था। चाहता था कि किसी तरह आलीजाह के कदमों में पहुँचकर इस खानदानी झगड़े को समाप्त करवा दूँ। इसीलिए आलीजाह के कदमों में आना चाहता था पर आदमी जो चाहता है वही तो हमेशा नहीं हो पाता।

जो रहीम भावी कतौं होती आपुने हाथ।
राम न जाते हरिन संग सीय न रावन साथ॥

और जहाँपनाह !

जेहि नभ सर पंजर कियो रहिमन बल अवशेष।
सो अर्जुन बैराट घर रहे नारि के भेष॥

न आ सका जहाँपनाह के कदमों में। महावतखाँ को लिखा हुआ पत्र भी पकड़ा गया। शाहजादा साहब नाराज हुए। इस बुढ़ापे में कैदखाना भोगा। बचा हुआ एक लड़का और पोता भी मारा गया। मरते-मरते यह सब भी नसीब में… (**उससे आगे नहीं बोला जाता और आँखों से आंसू गिरने लगते हैं।**)

जहाँगीर

जो कुछ हुआ, उसका मॉबदौलत को निहायत अफसोस है खानखाना। पर जैसा तुमने कहा सब बातें आदमी के हाथ नहीं होतीं। महावतखाँ को लिखे हुए तुम्हारे उस पत्र का हाल मॉबदौलत जानते हैं। इन्हीं सब बातों की वजह से तुम्हें माफी देकर तुम्हारा खिताब और तुम्हारी जागीर भी तुम्हें फिर से लौटायी गयी है। बैठ जाओ, जो कुछ बीत चुका है उस पर अब दुःख-संताप करने से कोई लाभ नहीं।

[रहीम बैठ जाता है और सिर झुका लेता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

रहीम

(फिर खड़े होकर) अब जहाँपनाह से फिर वही प्रार्थना है जो वर्षों पहले उस समय की थी जब आलीजाह की तख्तनशीनी के बाद पहले पहल आगरे में हाजिर हुआ था। अब जहाँपनाह मुझे छुट्टी बख्श दें। उस समय अगर आलीजाह ने छुट्टी दे दी होती तो यह सब न होता जो हुआ। दो साल के लिए मैंने फिर दक्खिन जाना मंजूर किया था लेकिन वर्षों बीत गये और अब मरने के करीब हूँ। जाते-जाते यह कहकर जाता हूँ :

देस में रहेंगे परदेस में रहेंगे
काहू भेष में रहेंगे पर रावरे कहाइहैं।

(बैठ जाता है।)

जहाँगीर

ठीक है, तुम जा सकते हो। लेकिन···लेकिन फकीर होने के पहले क्या तुम एक बात न करोगे ?

रहीम

कौन-सी, जहाँपनाह ?

जहाँगीर

जिस महावतखाँ ने तुम्हारे लड़के दाराबखाँ को मारा और सिर मुझे भेजने के पहले तरबूज के नाम से तुम्हारे पास भेजा और तुमने उसे 'तरबूज शहीदी' नाम दिया, उस महावतखाँ से तुम बदला न लेना चाहोगे ?

[रहीम कुछ चौंक-सा पड़ता है। पर कोई उत्तर नहीं देता। जहाँगीर बड़े गौर से रहीम की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

जहाँगीर

खानखाना ! एक तरफ तुम बड़े भारी शायर हो और विरागी, दूसरी तरफ तुम बड़े भारी सिपहसालार हो और दिलेर। दो, एक दूसरे

से विरुद्ध, महान सद्गुणों का तुममें अजीबोगरीव ढंके से मिलन हुआ है। तुम्हारी सारी गुजिस्ता जिन्दगी इस बात का जीता-जागता प्रमाण है। तुमने जैसी रसभरी शायरी की, दिल खोलकर दान दिये, वैसी ही बहादुरी से तुमने बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ीं और उनमें महान विजय प्राप्त की। जिसने तुम्हारी बची हुई औलाद को भी खत्म कर दिया और इस बात की परवाह किये बिना कि उस औलाद का सिर देखकर तुम्हारी क्या दशा होगी, तरबूज के नाम उसका सिर तुम्हारे पास भेजा, वह महावतखाँ मूछों पर ताव देते हुए घूमता फिरे और तुम फकीर हो जाओ, यह तुमसे कैसे सहन होगा।

[रहीम फिर भी कुछ नहीं बोलता पर उसके मुँह से एक दीर्घ निःश्वास निकल पड़ती है। जहाँगीर गौर से उसकी ओर देखता रहता है।]

जहाँगीर

जितनी भी चाहो फौज ले लो उस बलवायी को खत्म करो। और फिर लगा दो अपना जीवन भगवान की भक्ति में **(कुछ रुककर)** देखो, जब तुम उस बदजात महावतखाँ से बदला लेकर इस दुनियाँ को छोड़ भगवान की भक्ति करोगे तभी तुम्हें शान्ति भी मिलेगी, नहीं तो याद रक्खो भगवान के भजन में भी महावतखाँ का चेहरा तुम्हारी आँखों के सामने घूमता रहेगा।

[रहीम फिर भी कुछ नहीं बोलता। जहाँगीर गौर से उसकी ओर देखता रहता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता।]

जहाँगीर

बोलो क्या कहते हो ?

रहीम

(सिर उठाते हुए) क्या कहूँ, जहाँपनाह !

जहाँगीर

जो मैंने ा वही ठीक रास्ता है। दस-पाँच दिन में ही तुम उसे ठिकाने लगा ो। फिर निश्चिन्त होकर भजन करना।

[जहाँगीउठकर जाने के लिए खड़ा होता है, सारी सभा खड़ी हो जाती है।

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान

लाहौरें शाहीमहल का वही कमरा जो इस अंक के पहले दृश्य में था

समय

सन्ध्या

[जाना बेग राधाकृष्ण की आरती करते हुए गा रही है।]

हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ।
समदसी है नाम तुम्हारौ सोई पार करौ॥
इक वहा पूजा में रखते इक घर धिक परो।
सो दुवेधा पारस नहीं जानत कंचन करत खरौ॥
इक नदिया इक नार कहावत मैलो नीर भरौ।
जब मिलि गए तब एक बरन ह्वै गंगा नाम परौ॥
तन माया ज्यों ब्रह्म कहावत सूर सू मिलि बिगरौ।
कै इनकौ निरधार कीजियै कै प्रन जात टरौ॥

[गीत पूर्ण होते-होते रहीम का शीघ्रता से प्रवेश।]

रहीम

बेटी···बेटी, मिल गयी···मिल गयी मुझे छुट्टी !

जाना बेगम

(**प्रसन्नता से**) मिल गयी छुट्टी आपको !

रहीम

हाँ, मिल गयी छुट्टी बेटी, और बादशाह सलामत ने छुट्टी दी तमाम कुसूरों को माफ़ कर, पुरानी जागीर बहाल कर, खानखाना का खिताब फिर से बख्श कर ।

जाना बेगम

(**उसी प्रकार प्रसन्नता से**) ···तो···तो अब हम इन सब राजनीतिक पचड़ों, झंझटों से मुक्त होकर चलेंगे और···और कहाँ रहेंगे यह भी आपने सोच लिया होगा ?

रहीम

तुलसीदास जी अब नहीं हैं, बहुत थोड़े दिन पहले वे चल दिए । वे होते तो सीधा चलता सोरों उन्हीं के चरणों में । वे कभी काशी, कभी अयोध्या, कभी चित्रकूट, कभी प्रयाग में घूमा करते, मैं भी घूमता उन्हीं के साथ । हिन्दूधर्म और इस्लाम साथ-साथ चलता, साथ-साथ चलतीं राम कथा की चौपाइयाँ और कुरान की आयतें । तुम्हारी माँ नमाज और पूजा एक साथ चलाती थी । तुम भी वही करती हो । तुलसीदास जी के संग रहने पर यह सारा कृत्य कितना पवित्र, कितना सुन्दर और कितना भावमय हो जाता ! उम्र के रहते हुए दिन कैसे आनन्द से बीतते और तुलसीदास जी के संग रहने पर मैं भी अब जो काव्य-रचना करता हूँ वह कैसी अलौकित होती !

भजऊँ तो का को मैं भजऊँ तजऊँ तो को है आन ।
भजन तजन ते विलग हैं तेहि रहीम तू जान ॥

पर···पर बेटी, वह मौका ही चला गया ।

जाना बेगम

फ़िर अब आप कहाँ रहेंगे ?

रहीम

तय तो नहीं किया है, वह करूँगा तुम्हारी सलाह से, पर अभी तो यही सोच रहा हूँ कि व्रजमण्डल में निवास करूँ। दिल्ली से बहुत दूर भी न होऊँगा और मरने पर तुम मुझे उस मकबरे में दफना सकोगी जो मैंने तुम्हारी माँ के लिए बनवाया था। व्रजमण्डल के स्मरण मात्र से मुझे रोमाञ्च हो आता है। फिर वहाँ रहने में तो कितना आनन्द आयगा यह सोचने की भी बात नहीं है। हाल ही में रसखान ने लिखा है—

मानस हौं तो वही रसखानि बसौं,
व्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तौ कहा बस मेरो,
चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं तो वही गिरि को,
धर् यो कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं,
मिलि कालिन्दी कुल कदम्ब की डारन॥

(**कुछ रुककर**) और···और बेटी, बादशाह सलामत ने एक बात··· और भी अच्छी कर दी है !

जाना बेगम

वह कौन सी ?

रहीम

वह मेरे साथ उस कमबख्त महावतखाँ को ठिकाने लगाने के लिए शाही लश्कर भी भेज रहे हैं।

जाना बेगम

(**कुछ आश्चर्य से**) आपके साथ शाही लश्कर भेज रहे हैं ! याने ?

रहीम

याने···याने यह कि महावतखाँ ने जो बलवा किया है उसके लिए वह उसे बड़ी से बड़ी मौत की सजा देना चाहते हैं। उन्होंने कहा (**सिर**

हिलाते हुए) और बहुत ठीक कहा बेटी ! महावतखाँ ने जिस तरह तुम्हारे रहे हुए भाई की हत्या की, उसका सिर तरबूज के नाम से मेरे पास भेजा, जिसे मैंने तरबूज़ शहीदी नाम दिया उस बदजात महावतखाँ को जब तक मौत की सजा नहीं दी जायगी तब तक मुझे क्योंकर शान्ति मिलेगी। तुम्हारे भाई का चेहरा, तुम्हारे भाई का वह कटा हुआ सिर दिन और रात मेरे सामने घूमता रहेगा। मैं कैसे कर सकूँगा सन्तोष से भगवत-भजन, नमाज, पूजा और काव्य-रचना। इसलिए···इसलिए बादशाह सलामत ने मुझपर, दूसरी दूसरी महरबानियों के साथ एक तरह से यह सबसे बड़ी इनायत की है।

जाना बेगम

(एक दीर्घ निःश्वास छोड़ निराशा भरेस्वर में) तो···तो यथार्थ में यह शाही लश्कर आपके सेनापतित्व में महावतखाँ को ठिकाने लगाने जा रहा है !

रहीम

तुम यह भी समझ सकती हो।

जाना बेगम

तब जो बात अभी आप छुट्टी की कह रहे थे, वह ?

रहीम

छुट्टी तो उन्होंने दे ही दी है !

जाना बेगम

छुट्टी उन्होंने दे दी है और इतना बड़ा लश्कर भी आपके पीछे लगा दिया है !

रहीम

यह लश्कर तो एक खास मकसद के लिए है।

जाना बेगम

बिना किसी मकसद के तो कोई लश्कर कहीं नहीं जाता।

रहीम

पर बेटी, यह तो दस पाँच दिन का काम है, उसके वाद तो छुट्टी ही छुट्टी है ।

जाना वेगम

दक्खिन की फतह करने का काम दो साल का था । दो साल की जगह कितने वर्ष लग गये आपको दक्खिन में ?

रहीम

पर, उसमें और इसमें वहुत अन्तर है ।

जाना बेगम

कैसा ?

रहीम

वह था, एक मुल्क को फतह करने का काम और यह है एक व्यक्ति को ठिकाने लगाने का ।

जाना वेगम

लेकिन, महावतखाँ कैसा व्यक्ति है इसे आप मुझसे कहीं अधिक जानते हैं ।

रहीम

पर, एक तरफ महावतखाँ और दूसरी तरफ सल्तनत मुगलिया की पूरी शक्ति ।

जाना वेगम

मुल्क इधर उधर भाग नहीं सकता, व्यक्ति न जाने कहाँ-कहाँ फरार हो सकता है । महावतखाँ के समान होशियार सिपहसालार आपको कहाँ-कहाँ और और कितना भटकायेगा, कितने चकमे देगा, यह आपने सोचा है ?

रहीम

पर, आखिर वह दुनियाँ से गायब तो हो नहीं सकता । रहेगा तो

इसी जमीन पर। दस-पाँच दिन में ठिकाने न लगेगा तो महीने दो महीने में तो लग जायगा। (**एक चौकी पर बैठ जाता है।**)

[**जाना बेगम भी दूसरी चौकी पर बैठ जाती है और फिर एक दीर्घ निःश्वास छोड़ती है। कुछ देर निस्तब्धता।**]

रहीम

(**ध्यान से जाना बेगम की ओर देखते हुए**) मैं···मैं तुम्हारी भावनाओं को समझता हूँ, पर·· पर बेटी, तुम···तुम भी मेरी भावनाओं को समझने की थोड़ी कोशिश करो। मैं···मैं जीवनमुक्त नहीं हुआ हूँ। भगवद्गीता में जिसे स्थितप्रज्ञ और गुणातीत कहा गया है वह भी मैं नहीं हूँ। सुख-दुःख मेरे लिए समान नहीं हो गये हैं, मेरे मन में सदा से विराग रहा है, अभी भी वह मौजूद है पर··पर उसी के साथ महावतखाँ ने मेरी उम्र में मेरे साथ जो सलूक किया है उसे···उसे भी मैं कैसे भूलूँ? सचमुच तुम्हारे मरहूम भाई का चेहरा मेरी आँखों के सामने घमता रहता है। उसके कटे हुए सिर की जब मुझे याद आ जाती है तो दिल पर जो गुजरती है वह मैं शब्दों में नहीं कह सकता। बादशाह सलामत इन्सान के दिल को जानते हैं, उसकी भावनाएँ समझने की शक्ति रखते हैं। उन्होंने ठीक, बिल्कुल ठीक कहा कि जब तक महावतखाँ ठिकाने न लग जायगा तब तक मुझे शांति नहीं मिल सकती, तब तक मैं कैसे संतोष से भगवद् भजन और शायरी कर सकता हूँ, बेटी···बेटी, बहुत जल्द उस कमबख्त, बदजात महावतखाँ से पूरा-पूरा बदला चुकाकर जिन्दगी के रहे हुए दिनों को मैं भगवान के और सरस्वती के चरणों में अर्पित कर दूँगा।

[**जाना बेगम कोई उत्तर नहीं देती। उसका सिर झुक जाता है। रहीम उसकी ओर देखता रहता है। कुछ देर निस्तब्धता।**]

रहीम

अच्छा···अच्छा, इस समय तो भावी विरागमय जीवन के संबन्ध में कोई अच्छा गाना गाओ।

जाना बेगम

(धीरे धीरे सिर उठाते हुए एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर) इस··· इस समय मुझसे गाया न जा सकेगा ।

रहीम

अच्छा···अच्छा···

यवनिका

उपसंहार

स्थान

दिल्ली में एक हवेली का कमरा

समय

रात्रि

[कमरे की दीवालें ईंट चूने की बनी हुई हैं और रंगी हुई हैं। कमरा बेशकीमती आरायशी सामान से सजा हुआ है। दाहिनी ओर दीवाल के निकट एक पलंग है, जिस पर बीमार रहीम लेटा हुआ है। बायीं ओर की दीवाल में एक बड़ी खिड़की है जिससे फैला हुआ चाँदनी का प्रकाश दृष्टिगोचर होता है, पर बहुत स्पष्ट नहीं, धुँधला सा। रहीम का पलंग इस प्रकार बिछा हुआ है जिससे वह मकबरे को देख सकता है। रहीम के पलंग के निकट एक चौकी पर जाना बेगम बैठी हुई मन्द-मन्द स्वर से रहीम को एक गीत सुना रही है।]

काया बौरी चलत प्रान काहे रोई

काया पाय बहुत सुख कीन्हों नित उठि मलि मलि धोई।
सो तन छिआछार ह्वै जैहै नाम न लैहै कोई॥
कहत प्रान सुनु काया बौरी मोर तोर संग न होई।
तोहिं अस मित्र बहुत हम त्यागा सङ्ग न लीन्हा कोई॥
ऊसर खेत कै कुसा मँगावै चाँचर चवर कै पानी।
जीवत ब्रह्म को कोई न पूजै मुरदा कै मिहमानी॥
सब सनकादि आदि ब्रह्मादिक सेस सहस मुख होई।
जो जो जन्म लियो बसुधा में थिर न रह्यो है कोई॥
पाप पुन्य है जन्म सँघाती समुझि देख नर लोई।
कहत कबीरा अन्तर की गति जानत बिरला कोई॥

[गीत पूर्ण होने पर जब रहीम कुछ नहीं बोलता तब जाना बेगम कुछ चिन्ताकुल होकर रहीम की ओर ध्यान से देखती है। उसका इस प्रकार देखना रहीम से छुप नहीं पाता।]

रहीम

अभी···अभी जिन्दा हूँ, बेटी। पर···पर अब शायद बहुत देर नहीं है। तेरे गाने···गाने का स्वर मेरे···मेरे कानों में पड़ रहा था। और··· और मेरी आँखों के सामने घूम रहा था मेरा···मेरा सारा···सारा गत जीवन ! बेटी···बेटी, जिस तरह···जिस तरह मेरा···मेरा जीवन बीता, उससे···उससे मुझे बहुत···बहुत असंतोष नहीं है। पर···पर न जाने क्यों आज जब-जब मैं अपने जीवन के बीते हुए दृश्यों को देखता हूँ, जो कुछ मैं सोचता रहा···करता रहा, उस पर··· उस पर विचार करता हूँ तो···तो इस समय मुझे जो कुछ सूझ पड़ रहा है, वह···वह इसके पहले कभी नहीं सूझा था। मैं···मैं यह···यह मानता था कि मेरे मन में विराग है, पर···पर आज मुझे प्रतीत होता है कि वह विराग सच्चा विराग नहीं था। उस···उस विराग में ऐसे···ऐसे राग का समावेश था जिससे मैं आखिर तक भी अपना पिण्ड न छुड़ा पाया। गोस्वामी तुलसी-दास जी का जीवन मुझे आकर्षित जरूर करता था, पर···पर उस आकर्षण में इतनी ताकत न थी कि मैं आसक्ति की जंजीरों को तोड़ पाता।···मुझे वैभव में, शक्ति में, सम्मान में सुख···सुख मिलता था, उस···उस वैभव से, उस शक्ति से, उस सम्मान से जब मैं दूसरे को सहायता देता था तब···तब और सुखी, हाँ, और सुखी होता था। मुझे अपना वह वैभवशाली···वह शक्तिशाली···वह सम्मानप्रद जीवन यथार्थ में इतना प्रिय···प्रिय था कि जब···जब वह···वह वैभव गया, वह शक्ति गयी, वह सम्मान गया तब···तब फिर से उसे किसी प्रकार से भी प्राप्त करने के लिए मैं छटपटा उठा। और···और कितना सुखी हुआ उस समय जब उस···उस समय···वह···वह गया हुआ वैभव, गयी हुई शक्ति, गया हुआ सम्मान मुझे फिर···फिर प्राप्त हो गया। जीवन की यह···यह

धूप-छाँह फिर भी···फिर भी मेरे जीवन के साथ चलती रही। कितने··· कितने बार कितने···कितने प्रकार का उतार-चढ़ाव, कितनी···कितनी तरह की उखाड़-पछाड़ मैंने जीवन में देखी। वैभव, शक्ति, सम्मान आये, गये, फिर आये फिर गये और···और मैं सुखी होता रहा, दुखी होता रहा। वित्तेषणा, पुत्रेषणा, लोकेषणा, याने धन की चाह, पुत्र की चाह, यश की चाह संसार की ये तीन सब···सबसे बड़ी लालसाएँ हैं। लाहौर से चलते वक्त जैसा···जैसा मैंने तुमसे कहा था मैं कोई जीवनमुक्त नहीं, न स्थितप्रज्ञ गुणातीत हूँ। अतः···अतः इन तीनों लालसाओं से मैं कभी···कभी भी मुक्त नहीं रहा। दो लालसाएँ वित्तेषणा और लोकेषणा तो आयीं, गईं, फिर आईं। पर···पर पुत्रेषणा की मुराद पूरी होने पर भी जो···जो पुत्र छिन गये थे वे न लौटे और···और इसलिए···इसलिए बेटी, मेरे आखिरी···आखिरी जिगर के टुकड़े को जिस···जिसने कत्ल किया था, उसे···उसे ठिकाने लगा—उससे बदला लेने की अपनी इच्छा को मैं···मैं कोई अस्वाभाविक इच्छा नहीं मानता। मेरी वह···वह आखरी मुराद पूरी नहीं हुई।···पर·· पर जैसा मैंने एक दिन तुमसे कहा था, उस हत्यारे महावतखाँ को भगवान उसके कर्मों का फल देंगे। मैंने ···तुमसे अभी-अभी कहा मैं जीवन···जीवन से असन्तुष्ट नहीं हूँ।··· बादशाह सलामत ने लाहौर से बिदा करते समय मुझसे कहा था, मुझमें दो, एक दूसरे से विरुद्ध, गुणोंका अजीबो-गरीब तरीके से मिलन हुआ है। एक तरफ मैं शायर हूँ और विरागी, दूसरी तरफ सिपहसालार और दिलेर। इसीलिए···इसीलिए मैंने एक बार···एक बार लिखा था—

अब रहीम मुश्किल पड़ी गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहीं झूठे मिले न राम॥

बादशाह सलामत ने मुझे ठीक···ठीक आँका था। पर···पर अगर मैं सिर्फ सिपहसालार और दिलेर होता और शायर नहीं,साथ ही··· साथ ही मुझ···मुझमें चाहे सौ टंच का विराग न हो पर विराग का पुट न होता तो···तो शायद ही दुनियाँ मुझे याद रखती! न जाने कितने··

कितने सिपहसालार और दिलेर आकर चले गये। उनकी महानता बहुधा उनके जीवन काल तक ही रहती है, मैं···मैं बेटी, मरने के बाद भी यदि जिन्दा रहूँगा तो···तो अपनी शायरी··शायरी के कारण उस···उस शायरी में जो विराग का पुट है, उस···उस विरागी पुट के कारण। इसीलिए···इसीलिए जो अभी-अभी दो बार कह चुका हूँ फिर···फिर दोहराता हूँ, मुझे···मुझे जीवन से असन्तोष नहीं···

[रहीम चुप हो जाता है। जाना बेगम फिर चिन्ताकुल दृष्टि से उसकी ओर देखती है। रहीम से उसकी दृष्टि फिर नहीं छिपती।]

रहीम

अभी···अभी भी जिन्दा हूँ, बेटी। फिर···फिर कुछ गाओ, बेटी! ऐसा···ऐसा गीत जो जिन्दा रहते हुए भी मेरे···मेरे इस मन को इस दुनियाँ से कहीं···कहीं ऊपर उठाकर ऐसी···ऐसी जगह ले जाय जहाँ इस संसार-चक्र के सुख-दुःख, हानि-लाभ, यश-अपयश नहीं।

[जाना बेगम फिर धीरे धीरे गाती है।]

जाना बेगम

रहना नहिं देस बिराना है।
यह संसार कागद की पुड़िया बूँद पड़े घुल जाना है।
यह संसार काँट की बाड़ी उलझ पुलझ मर जाना है॥
यह संसार झाड़ औ' झाँखर आग लगे बरि जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सतगुरु नाम ठिकाना है॥

यवनिका

अशुद्धि-शुद्धि पत्र

प्रष्ठ	पंक्ति	शुद्ध	अशुद्ध
१०	१२	चौंको	चौबों
१३	१३	कोई ब्रज	कोऊ ब्रज में
२०	७	आनन्द	आनन्दकन्द
२४	१७	रहीम	रहिमन
२६	१२	इसी··है	उसी···रहती है।
३१	२३	करा	करौ
३३	४	इसके	उसके
३३	१५	इस	उस
३४	४	इसका	इन
३५	२४	कहत नाहिं	कहत नहिं
३७	१६	भरि	भरी
३८	१४	औरत	हसीना
३९	१७	फल	फूल
४३	८	हो रही	रही
४४	२	भी	ही
४४	६	वाह्वत्र	वाह्य
४५	२६	संकट	शंकर
४५	८	हिन्दी	हिन्दू
४६	३	राजिव	राजीव
४६	११	हृदयँ	हृदय
४८	१०	कहो	कहु
५०	९	स्वीकया	स्वकीया
५२	२३	सारेव	सखी
५४	१	कठपुतरी	कठपूतरी
५५	९	जब	तब
५५	९	कुछ	कछु
५५	२६	इस	उस
६०	९	होई	होय
६०	१०	कोई	कोय
६५	५	बाढ़ि	बाढ़ी

प ृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध	अशुद्ध
६६	७	बाल	बोल
६७	२०	विगारहु	बिगारहू
६८	२	खादीम	खादिम
७२	८	वहां	जहाँ
७४	१	उनकी	इनकी
७७	२	इन्हीं	उन्हीं
८२	८	भी	तो
८५	८	मड़ि	मणि
८५	८	की	थी
८५	१८	भुजंग	भुजग
८७	१	बाँकि	बाँकी
८७	१८	दुःख	दुख
८८	१५	कोउ	कोऊ
९०	२६	भाव	भावी
९१	२२	इनका	उनका
९१	२३	लापटात	लपटात
९२	८	न	ना
९२	१४	बनाना	बढ़ाना
९२	१७	वलवीयत	वलीहद
१००	१	ब्याधि	बियाधि
१००	१	जाही	जाहु
१०१	७	झाड़	झाड़ू
१०१	१३	"	"
१०२	१४	लेई	लेइ
१०४	२४	मेरा उनका	मैं उनके
१०५	६	होती	होत
१०८	१६	रखने	राखत
१०८	१६	धिक	बधिक
१०९	१९	रहते	रहे
११६	२६	जब उस' ' 'उस समय	उस' ' 'उस समय जब

ओरिएण्टल बुक डिपो

ओरिएण्टल बुक डिपो

C. L. Sapru.

ओरिएण्टल बुक डिपो
दिल्ली